व्यावहारिक हिंदी

(हिंदी–क)

ALL UG COURSES

सेमेस्टर-III/IV

ABILITY ENHANCEMENT COURSES (AEC) - हिंदी

As per the UGCF - 2022 and National Education Policy 2020

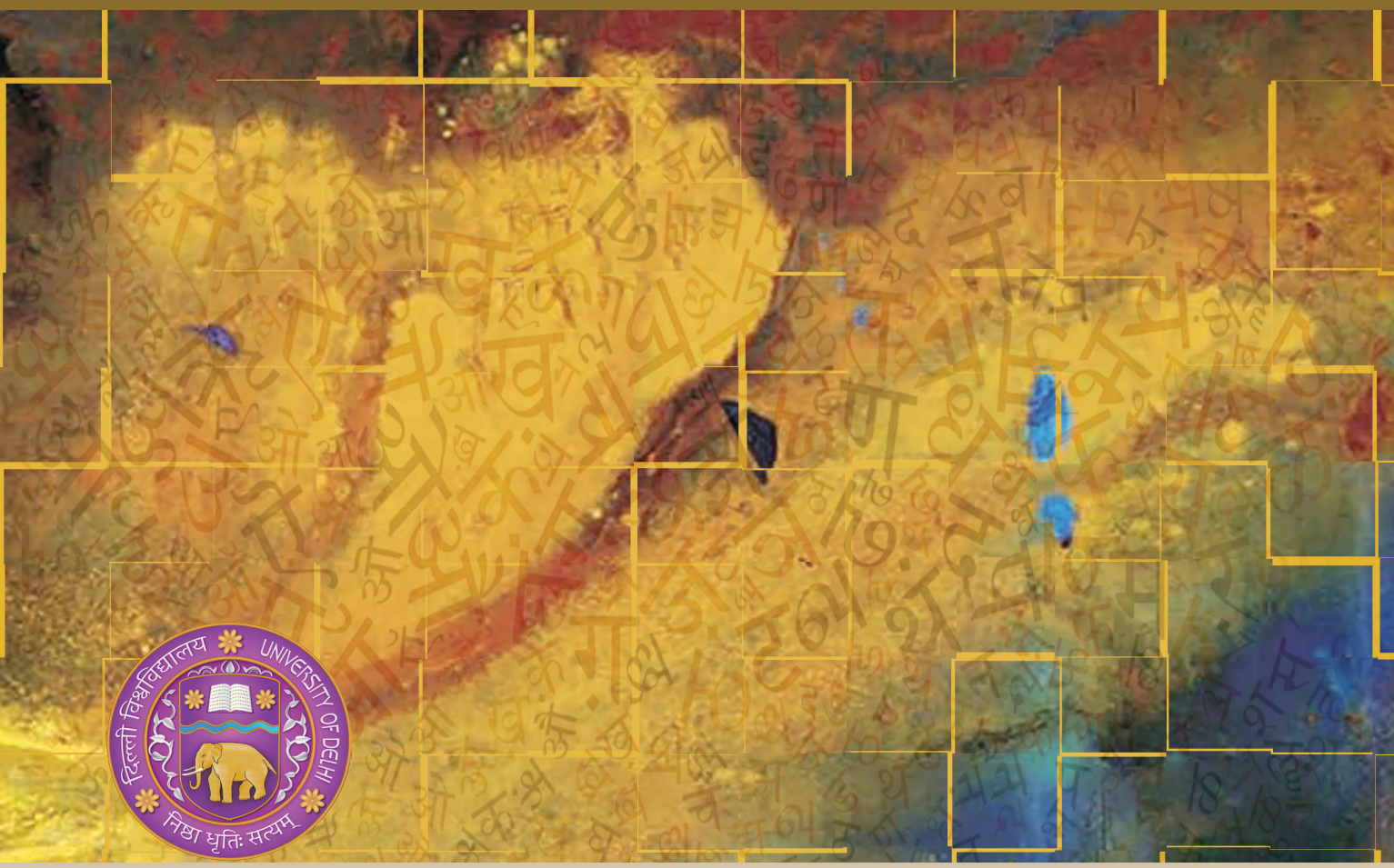

दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग
मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक मंडल

प्रो. भवानी दास

पाठ्य-सामग्री लेखक

प्रो. रवि शर्मा 'मधुप', डॉ. शैलेश शुक्ला

शैक्षणिक समन्वयक

दीक्षान्त अवस्थी

© **दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा-विभाग**

ई-मेल : ddceprinting@col.du.ac.in
hindi@col.du.ac.in

प्रकाशक :
दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग
मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय-110007

मुद्रक :
मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

समीक्षक
डॉ. जाहिदुल दीवान

बाह्य समीक्षक
प्रो. हरीश अरोड़ा
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

- स्व-शिक्षण सामग्री (एस.एल.एम.) में वैधानिक निकाय, डीयू/हितधारकों द्वारा प्रस्तावित सुधार/संशोधन/सुझाव अगले संस्करण में शामिल किए जाएँगे। हालाँकि, ये सुधार/संशोधन/सुझाव वेबसाइट https://sol.du.ac.in पर अपलोड कर दिए जाएँगे। कोई भी प्रतिक्रिया या सुझाव ईमेल- feedbackslm@col.du.ac.in पर भेजे जा सकते हैं।

विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., प्लॉट 20/4, साईट-IV, इंडस्ट्रियल एरिया साहिबाबाद, गाजियाबाद - 201010 में मुद्रित (20,000 प्रतियाँ) 2024

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

SYLLABI-BOOK MAPPING TABLE

व्यावहारिक हिंदी (हिंदी-क)

Syllabi	Mapping in Book
इकाई I: व्यावहारिक हिंदी • व्यावहारिक हिंदी के विविध रूप (सामान्य परिचय) • बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी • संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व • बम्बइया हिंदी, कलकतिया हिंदी, हैदराबादी हिंदी	**पाठ 1:** व्यावहारिक हिंदी **(पृष्ठ 3-22)**
इकाई II: संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विविध रूप • सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग (अस्पताल, बाज़ार, मॉल, मंडल) • बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली • कार्यालयों में प्रचलित हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली • बाज़ार/दर्शनीय स्थल/क्रिकेट मैच का अनुभव-लेखन	**पाठ 2:** सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग और अनुभव-लेखन **(पृष्ठ 25-45)** **पाठ 3:** बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली **(पृष्ठ 47-70)**

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

विषय–सूची

इकाई I: व्यावहारिक हिंदी

पाठ 1: व्यावहारिक हिंदी 3-22

इकाई II: संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विविध रूप

पाठ 2: सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग और अनुभव-लेखन 25-45

पाठ 3: बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली 47-70

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

इकाई I: व्यावहारिक हिंदी

पाठ 1 : व्यावहारिक हिंदी

टिप्पणी

पाठ : 1

व्यावहारिक हिंदी

प्रो. रवि शर्मा 'मधुप'
श्री राम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

रूपरेखा

1.1 अधिगम का उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 व्यावहारिक हिंदी – सामान्य परिचय
1.4 व्यावहारिक हिंदी के विविध रूप
1.5 बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी – अर्थ एवं स्वरूप
1.6 अनुच्छेदों और अधिनियमों के द्वारा हिंदी का प्रयोग एवं महत्त्व
1.7 संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग
1.8 बंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी और हैदराबादी हिंदी का प्रयोग
1.9 निष्कर्ष
1.10 शब्दावली
1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.12 अभ्यास–प्रश्न
1.13 संदर्भ–ग्रंथ

1.1 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद विद्यार्थी–

- व्यावहारिक हिंदी के शाब्दिक और प्रयोगगत अर्थ को जान सकेंगे।
- व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग और उसके भेद से अवगत हो सकेंगे।
- व्यावहारिक हिंदी के सामाजिक एवं साहित्यिक स्तर से परिचित हो सकेंगे।
- व्यावहारिक हिंदी के विविध रूपों से अवगत हो सकेंगे।

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

टिप्पणी

1.2 प्रस्तावना

व्यावहारिक शब्द व्यवहार शब्द में 'इक' प्रत्यय के योग से बना हुआ एक विशेषण शब्द है। इसका अर्थ है– 'व्यवहार में प्रयुक्त'। किसी भी भाषा का जो रूप जनसामान्य के व्यवहार में प्रयुक्त होता है, उसे उस भाषा का व्यावहारिक रूप कहा जाता है। इसी आधार पर, हिंदी भाषा का जो रूप लोगों द्वारा अपने दैनिक जीवन में विभिन्न कार्यों और विशेष उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे ही व्यावहारिक हिंदी कहा जा सकता है। व्यावहारिक हिंदी का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितनी प्राचीन स्वयं 'हिंदी' है।

व्यावहारिक हिंदी में जन जीवन का जैसा सजीव और सच्चा चित्रण मिलता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसने जैसा देखा, वैसा कह एवं लिख दिया। इसी प्रकार व्यावहारिक हिंदी का जन्म हुआ। व्यावहारिक हिंदी में भावों की सरल, सहज और स्पष्ट अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। जन सामान्य अपने विविध भावों एवं विचारों को जिन शब्दों में अभिव्यक्त करता है, वह सब कुछ व्यावहारिक हिंदी में आता है। यह किसी विशेष व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त नहीं होता। इसमें परंपरा और परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। व्यावहारिक हिंदी का जब समाज में व्यवहार के रूप में प्रयोग होता है, तो वह व्याकरणिक नियमों को तोड़ती भी है। यह तो सर्वविदित है कि भाषा का प्रयोग समाज के विविध पक्षों द्वारा किया जाता है और समाज विविध स्तरों में विभक्त होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिस समाज में वह रहता है, उसके नियमों और मान्यताओं के अनुसार ही भाषा का प्रयोग करता है।

1.3 व्यावहारिक हिंदी – सामान्य परिचय

व्यावहारिक हिंदी को कामकाजी हिंदी, प्रकार्यात्मक हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी भी कहा जाता है। व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग रोजमर्रा के जीवन में प्रयुक्त होने वाली हिंदी से ही नहीं है, बल्कि यह प्रयोजन के आधार पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा भी है। सामान्य अर्थ में व्यावहारिक हिंदी को बोलचाल की हिंदी बेशक मान लिया जाए, परंतु विस्तृत अर्थ में वह विविध क्षेत्रों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी ही है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

विद्वानों के मतानुसार 'व्यावहारिक हिंदी' की अपेक्षा 'कामकाजी' या 'प्रयोजनमूलक हिंदी' शब्द प्रयोग अधिक उचित है। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रयोजनमूलक हिंदी एक ऐसी हिंदी है, जिसे प्रयोजनपरक कहा जा सकता है। डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने कहा है, "वास्तव में सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा एक ही होती है, किंतु शब्दावली और संरचना की दृष्टि से दोनों अलग हो जाती हैं।" व्यावहारिक हिंदी में विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, वहीं सामान्य भाषा में अनौपचारिकता का भाव होता है। हम देखते हैं कि वैज्ञानिक, पत्रकार, डॉक्टर, व्यापारी आदि अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित हिंदी भाषा के विशिष्ट स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक या व्यावहारिक हिंदी मानते हैं।

व्यावहारिक हिंदी में 'प्रयोजन के आधार पर' विशेषण का प्रयोग मूलतः नया है। इसका एक कारण हिंदी भाषा और उसमें समाहित बोलियाँ हैं, अर्थात् हिंदी का बोलचाल का रूप जितना पुराना है, उतना व्यावहारिक या प्रयोजनमूलक रूप नहीं है। देखा जा सकता है कि वाणिज्य एवं व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी पहले से ही देश की संपर्क भाषा बनी हुई थी, लेकिन आधुनिक युग में हिंदी नए–नए रूपों में प्रस्तुत की गई। 19वीं शताब्दी में पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संपर्क और शिक्षा में आधुनिकता के प्रचार–प्रसार के परिणामस्वरूप हिंदी को नवीन प्रयोग क्षेत्रों से गुजरना पड़ा। हिंदी भाषा के नित्य नए प्रयोग बढ़ते गए, साथ ही नवीन क्षेत्रों के अनुरूप व्यावहारिक हिंदी का रूप भी समयानुसार परिवर्तित, परिवर्धित एवं विकसित होता चला गया।

सामाजिक दृष्टि से देखें, तो भाषा में विभिन्न संदर्भों, स्थितियों और कार्यों की दृष्टि से उसके कई रूप उभरने लगे, जिससे अपने प्रयोग से वह विषमरूपी बनती चली जाती है। भाषा वैसे तो समरूपी होती है लेकिन प्रयोग के आधार पर भेद होने से विषमरूपी हो जाती है, जैसे रेलगाड़ी, बस या धार्मिक स्थलों में व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग किया जाता है। व्यक्ति इसे वाक्यों और अपनी सूझ–बूझ से समझ लेता है, जैसे– मोटर भर गई है। भरती तो टंकी है, पर मोटर भरने का अर्थ हम समझ लेते हैं।

बोध–प्रश्न

1. व्यावहारिक हिंदी को निम्न में से जिन अन्य नामों से भी जाना जाता है वे हैं–

(क) कामकाजी हिंदी (ख) प्रकार्यात्मक हिंदी

(ग) प्रयोजनमूलक हिंदी (घ) उपर्युक्त सभी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

2. निम्न में से कौन–कौन से बिंदु हैं जिनके आधार पर व्यावहारिक हिंदी और सामान्य हिंदी में अंतर दिखाई देता है?

(क) विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग

(ख) औपचारिकता–अनौपचारिकता का भाव

(ग) कार्य क्षेत्र से संबद्ध विशिष्ट स्वरूप का प्रयोग

(घ) उपर्युक्त सभी

1.4 व्यावहारिक हिंदी के विविध रूप

भारत एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है। भारत में बोलने एवं लिखने–पढ़ने के आधार पर अनेक भाषाएँ हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची की अधिसंख्यक भाषाएँ हिंदी के ही समान साहित्यिक दृष्टि से संपन्न हैं। ये सभी भाषाएँ प्राचीन काल से ही जन समुदाय के संपर्क और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की भाषाएँ रही हैं, लेकिन सामाजिक–सांस्कृतिक कारणों से इनमें विविधता देखने को मिलती है। समाज में इनके विविध प्रयोग के कारण ही ऐसा हो पाया है। हिंदी की भी यही स्थिति रही है। विविध रूपों, स्तरों और भूमिकाओं में व्यावहारिक हिंदी के विभिन्न नाम हो जाते हैं, जिनमें से प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं–

क. वाणिज्यिक और व्यापारिक हिंदी– व्यावहारिक हिंदी मध्यकाल से लेकर आज तक संपर्क भाषा के रूप में कार्यरत है। व्यापार, व्यवसाय, आयात–निर्यात, वाणिज्य आदि में इसका प्रयोग सैंकड़ों वर्षों से होता आ रहा है। वस्तुओं के खरीदने से लेकर बेचने तक वाणिज्यिक और व्यापारिक हिंदी का प्रयोग अत्यधिक प्रचलित रहा है। स्वतंत्रता के बाद इसमें क्रमिक रूप से कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वाणिज्यिक और व्यापारिक हिंदी के प्रयोग को धीरे–धीरे बढ़ावा मिला। सरकार ने वाणिज्य शिक्षा के क्षेत्र में कई नए पाठ्यक्रम आरंभ कर दिए। इन पाठ्यक्रमों की पढ़ाई के लिए कई राज्यों में हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।

वाणिज्यिक और व्यापारिक शिक्षा को व्यावहारिक बनाया जा सके, जनसामान्य के अनुरूप बनाया जा सके, इसके लिए शिक्षा की व्यवस्था भारतीय समाज और संस्कृति के अनुसार ही होनी चाहिए। इससे उद्योगों और व्यापारिक प्रगति का लाभ सही एवं सुलभ रूप से जनसामान्य तक पहुँचाया जा सकेगा, तभी तो देश और समाज की आवश्यकताएँ पूर्ण

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

होंगी। हिंदी माध्यम से इस शिक्षा का प्रचार–प्रसार होने पर भारत के अधिक–से–अधिक लोग इसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में निश्चित पारिभाषिक शब्दावली एवं शैली का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे–

- 'चाँदी उछली, सोना लुढ़का'।
- टमाटर के भाव आसमान छू रहे हैं।

ख. वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी– वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी से तात्पर्य 'विज्ञान' के विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी से है। आधुनिक विज्ञान का जन्म 19वीं शताब्दी में माना जाता है। विज्ञान का संबंध जहाँ एक ओर तकनीकी से है, वहीं दूसरी ओर प्रौद्योगिकी से भी है। इसके अंतर्गत भौतिकी, रसायन, जीव–विज्ञान, चिकित्सा, कंप्यूटर, यांत्रिकी आदि विषय भी आते हैं। इन विषयों को व्यावहारिक हिंदी के अंतर्गत रखने से देश का अत्यधिक कार्य सुविधापूर्ण ढंग से एवं जनहित में हो सकता है। इन विषयों का साहित्य सामान्यतः निम्नलिखित माध्यमों में उपलब्ध है–

1. पुस्तकों के रूप में विज्ञान।
2. शोध–पत्रों तथा शोध पत्रिकाओं के रूप में।
3. कोशों तथा विश्वकोशों के रूप में।
4. जनसंचार माध्यम के रूप में।

1. **पुस्तकों के रूप में विज्ञान**– वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों की बढ़ती जानकारी से 20वीं शताब्दी में ज्ञान–विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र में ही क्रांति नहीं आई, अपितु उसका मानव जीवन पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। जिन देशों ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर अपने विचारों तथा अनुसंधानों के संबंध में पुस्तकें लिखीं, उनकी भाषाएँ न जानने वाले देशों के लिए अनूदित पुस्तकें लिखी गईं। इन पुस्तकों तथा पाठ्य सामग्री का चयन तथा प्रस्तुतीकरण उस देश तथा भाषा–भाषियों के शैक्षिक स्तर के अनुसार करना पड़ता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी संबंधी पुस्तकों की जानकारी आम आदमी तक पहुँचाने के लिए उसे सरल एवं बोधगम्य भाषा में रखने का प्रयास किया जाता है।
2. **शोध–पत्रों तथा शोध–पत्रिकाओं के रूप में**– आधुनिक शिक्षा एवं ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में शोध–पत्रों तथा शोध–पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संगोष्ठी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

आदि में पढ़े जाने वाले पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित 'शोधपरक सामग्री' विद्वानों द्वारा लिखी गई होती है, जिसमें पारिभाषिक और तकनीकी शब्दों तथा अभिव्यक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

3. **कोशों तथा विश्व कोशों के रूप में**– व्यक्ति के जीवन में कोशों का बहुत महत्त्व है। विभिन्न कोशों जैसे परिभाषा कोश, व्यक्ति कोश और विश्व कोश आदि में शब्दों को अकारादि क्रम में रखा होता है। परिभाषा कोश में प्रत्येक शब्द के अर्थ से संबंधित उसका सार, व्याख्या तथा विश्लेषण परिभाषा के रूप में लिखा रहता है। इसी प्रकार व्यक्ति कोश में व्यक्ति से संबंधित उसका जीवन–वृत्त, उपलब्धियों आदि का विवरण दिया जाता है। पुस्तक कोश में पुस्तक से संबंधित समग्र जानकारी दी जाती है। इसी प्रकार विश्वकोश में सूचनात्मक सामग्री की मात्रा अन्य कोशों की अपेक्षाकृत बहुत अधिक होती है। अंग्रेज़ी की भाँति हिंदी में भी प्रायः सभी विषयों से संबंधित कोश देखे जा सकते हैं। और–तो–और अब हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के कोश भी उपलब्ध हैं।

4. **जनसंचार माध्यमों में**– समाचार पत्र–पत्रिकाओं, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यमों द्वारा हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों से हमें देश–विदेश में होने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों की अनंत सूचनाएँ घर बैठे–बैठे ही प्राप्त हो जाती हैं। डिस्कवरी चैनल, नेशनल जियोग्राफिक चैनल, हिस्ट्री चैनल जैसे विदेशी चैनलों द्वारा भी हिंदी में विविध जानकारी प्रदान की जाती है। जनसंचार माध्यमों द्वारा दी गई जानकारी की भाषा सरल एवं सहज रखी जाती है। इसके प्रस्तुतीकरण को बहुत ही रोचक तथा आकर्षक बनाया जाता है। ये कार्यक्रम समय–समय पर जन सामान्य को जागरूक करने, उसे अपने कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हैं।

ग. विधिक हिंदी– विधिक हिंदी से तात्पर्य – 'लॉ या कानून' की हिंदी से है। जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में जज के सामने वकील दूसरे वकील से जब बहस करता है, तो इस कानूनी प्रक्रिया के दौरान जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे विधिक हिंदी, 'लॉ या कानून' की हिंदी कहते हैं। हम देखते हैं कि ब्रिटिश काल के प्रारंभिक दौर में विधिक संकाय में कामकाज फारसी के स्थान पर हिंदी में होने लगा था, लेकिन व्यवहार में अदालती भाषा उर्दू ही थी। बाद में अंग्रेज़ी ने इसका स्थान ग्रहण कर

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

लिया और अंग्रेज़ी भाषा प्रमुख रूप से विधि की भाषा बन गई। ऐसे में, धीरे–धीरे हिंदी हाशिये पर जाती चली गई। स्वतंत्रता के बाद 1970 में पहली बार विधिक शब्दावली तैयार की गई। संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित होने के बाद व्यावहारिक हिंदी विधि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु अन्य क्षेत्रों में भी तीव्र गति से विकसित होने लगी।

घ. कार्यालयी हिंदी– सरकारी, ग़ैर सरकारी या निजी कार्यालयों के औपचारिक लिखित कामकाज की भाषा को कार्यालयी भाषा कहा जाता है। कोई भी भाषा कार्यालयी भाषा हो सकती है। इसी कारण अलग–अलग प्रदेशों और देशों के कार्यालयों में अलग–अलग भाषाएँ कार्यालयी भाषा के रूप में प्रयोग की जाती हैं, जैसे महाराष्ट्र में मराठी, केरल में मलयालम, जापान में जापानी, रूस में रूसी भाषाएँ कार्यालयी भाषा के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इन कार्यालयी कार्यों के लिए जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है, उसे कार्यालयी हिंदी कहते हैं। हिंदी का यह रूप स्वतंत्रता के बाद विकसित हुआ, जब 14 सितंबर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इससे पूर्व राजभाषा के रूप में मुग़ल काल में फारसी और ब्रिटिश काल में अंग्रेज़ी को मान्यता मिली हुई थी। स्वतंत्रता के पश्चात् कार्यालयी भाषा के रूप में हिंदी अधिक सक्षम हुई है। कार्यालयों में जहाँ एक ओर व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर कार्यालयी भाषा के रूप में इसकी अपनी पारिभाषिक शब्दावली, पद रचना और वाक्य विन्यास का भी विस्तार देखा जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि व्यावहारिक हिंदी के विविध रूपों का विकास काफी तेज़ी से हो रहा है। जहाँ एक ओर वाणिज्य, व्यापार, तकनीकी और जनसंचार के रूप में व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग क्रमबद्ध रूप से बढ़ रहा है, वहीं जीवन के अन्य क्षेत्रों जैसे विधि क्षेत्र, कार्यालयों के कार्यक्षेत्र आदि में भी हिंदी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज़ करवा रही है।

बोध–प्रश्न

3. संवैधानिक मान्यता प्राप्त भारत की भाषाओं को संविधान की किस अनुसूची में शामिल किया गया है?

   (क) आठवीं अनुसूची (ख) पाँचवीं अनुसूची

   (ग) तीसरी अनुसूची (घ) पहली अनुसूची

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

4. विविध रूपों, स्तरों और भूमिकाओं में व्यावहारिक हिंदी के विभिन्न नाम हो जाते हैं। निम्न में से प्रमुख रूप हैं–

(क) वाणिज्यिक और व्यापारिक हिंदी (ख) वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी

(ग) विविध हिंदी, कार्यालयी हिंदी (घ) उपर्युक्त सभी

1.5 बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी – अर्थ एवं स्वरूप

आधुनिक परिवेश में बैंक से संबंधित अनेक कार्य राजभाषा हिंदी में हो रहे हैं। इसके लिए अब हिंदी में पर्याप्त शब्द–भंडार और हिंदी अधिकारी, अनुवादक, आशुलिपिक तथा टंकणकर्त्ता भी उपलब्ध हैं। आधुनिक स्तर पर हिंदी में निश्चित कार्य करने वाली समितियाँ तथा कार्य योजनाएँ भी विद्यमान हैं, फिर भी बैंकों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित कई प्रकार की कठिनाइयाँ देखी जा सकती हैं। बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी सरल नहीं जान पड़ती। इसके प्रयोग में असुविधा का भाव बना रहता है। राजभाषा होने के बाद भी हिंदी में कई प्रकार की सीमाएँ एवं रुकावटें दिखाई पड़ती हैं। आखिर क्यों? इसके कारण तथा निवारण इस प्रकार हैं–

- बैंक में काम करने वाले अधिकारी न तो वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र विषय के ज्ञाता होते हैं और न ही हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं पर उनकी एक जैसी पकड़ होती है। अतः भाषा को जानने वाले हिंदी अधिकारी शब्द की अवधारणा पर बल न देकर, भाषिक बनावट पर विशेष बल देते हैं। ऐसे में, विषय की जानकारी तथा दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले तथा हिंदी में शब्द निर्माण की क्षमता रखने वाले अधिकारियों का चयन किया जाना चाहिए।
- बैंकों में कार्य करने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारियों को सीमित, अल्पकालिक एवं औपचारिक प्रशिक्षण न देकर लंबे समय के लिए तथा गहन जानकारी एवं अभ्यास से युक्त प्रशिक्षण कार्यशालाएँ चलाई जानी चाहिए। इन कार्यशालाओं के जरिए हिंदी को प्रमुखता मिले, इसके लिए इन कार्यशालाओं के दौरान परीक्षाएँ एवं प्रतियोगिताएँ रखनी चाहिए। हिंदी में नोटिंग और ड्राफ्टिंग करने का ज्ञान और श्रेष्ठ कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार दिया जाना चाहिए, जिससे उनकी रुचि हिंदी में लगातार बनी रहे। बैंकों में नियमित रूप से हिंदी में कार्य की प्रगति का मूल्यांकन कराया जाए।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

- बैंकों में नामपट, पदनाम, सूचना पट आदि मानक हिंदी पारिभाषिक शब्दावली में तैयार कर एकरूपता लाने का प्रयास करना चाहिए।
- बैंकों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित तिमाही या अन्य रिपोर्ट हिंदी में ही प्रस्तुत की जानी चाहिए, जिससे हिंदी को बढ़ावा मिले।
- बैंकों में हिंदी पुस्तकालय की स्थापना होनी चाहिए, जिससे वहाँ के कार्मिकों और अधिकारियों की रुचि हिंदी में जाग्रत हो।
- देश की 70% जनता गाँव में रहती है। उनके साथ व्यवहार के लिए स्थानीय भाषा या हिंदी भाषा ही सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती है, अंग्रेज़ी नहीं।
- भारतीय परिवेश में विगत अनेक दशकों से हिंदी संपर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में जन सामान्य से जुड़ी हुई है। अतः बैंकों में भी हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ाना आवश्यक है, क्योंकि आम जनता इसमें सुविधा एवं आवश्यकताओं की पूर्ति सहज रूप से कर सकती है।
- बैंकों के कार्यों में मानक हिंदी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि देश भर में हिंदी एक समान रूप से प्रयुक्त हो।

आज व्यापार, वाणिज्य, अर्थव्यवस्था एवं वित्त क्षेत्रों में नवीन बोध जागृत हुआ है। भारत में राष्ट्रीय बैंकों के साथ–साथ अनेक विदेशी बैंक भी अब अधिक–से–अधिक सुविधाओं के साथ वित्तीय बाजार में आ गए हैं। आधुनिक दौड़ में ये वित्तीय कंपनियाँ एवं व्यापारिक संस्थाएँ अपने–अपने लक्ष्यों को लेकर भारतीय परिवेश में अपने–अपने उद्योगों के साथ आगे बढ़ रही हैं। वे भली–भाँति यह जान गई हैं कि अगर भारत में उद्योग करना है, लाभ कमाना है, तो यहाँ की भाषा को अपने व्यवहार में, अपने कामकाज में और संपर्क के रूप में लाना अत्यंत अनिवार्य है। अपनी वस्तु एवं सेवा का प्रचार–प्रसार करने के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग करना होगा।

वर्तमान समय में विज्ञापन का रूप ही बदल गया है। अब अधिकांश विज्ञापन अंग्रेज़ी में नहीं, अपितु हिंदी भाषा में बन रहे हैं और उनका प्रचार–प्रसार बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। व्यापारी ही नहीं, अब बैंक भी भारतीय बाजार और वित्त व्यवस्था पर अधिकार पाने का तरीका समझ चुके हैं। उन्हें अब अच्छी तरह समझ आ गया है कि जनता के लिए जनता की भाषा में काम करना कितना आवश्यक और लाभदायक है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बोध–प्रश्न

5. आधुनिक परिवेश में बैंक से संबंधित अनेक कार्य राजभाषा हिंदी में हो रहे हैं। ऐसा होने में, निम्न में से कौन–सी बातें सहायक हैं?

   (क) पर्याप्त शब्द भंडार

   (ख) हिंदी अधिकारी, अनुवादक, आशुलिपिक तथा टंकणकर्ता की उपलब्धता

   (ग) हिंदी में निश्चित कार्य करने वाली समितियों तथा कार्य योजनाओं की विद्यमानता

   (घ) उपर्युक्त सभी

6. देश में 70 प्रतिशत जनता गावों में रहती है। उनके साथ व्यवहार के लिए स्थानीय भाषा या हिंदी भाषा ही सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती है, अंग्रेजी नहीं। बैंकों या अन्य सस्थानों में हिंदी की सीमाओं एवं रुकावटों के निवारण हेतु निम्न में से कौन से उपाय उपयुक्त हैं?

   (क) हिंदी/स्थानीय भाषा/अंग्रेजी पर समान अधिकार वाले अधिकारियों का चयन

   (ख) हिंदी में कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार

   (ग) हिंदी में कार्य की प्रगति का मूल्यांकन

   (घ) उपर्युक्त सभी

1.6 अनुच्छेदों और अधिनियमों के द्वारा हिंदी का प्रयोग एवं महत्त्व

भारत के संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 में 'संघ की राजभाषा' संबंधी प्रावधान इस प्रकार हैं–

1. अनुच्छेद 343(1) के अधीन संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। प्रयोग किए जाने वाले अंकों के स्वरूप भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप हैं।
2. अनुच्छेद 343(2) के अधीन 15 वर्षों (26 जनवरी, 1965) तक सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी का यथावत प्रयोग होता रहेगा।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3. अनुच्छेद 343(3) में संसद 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् भी अंग्रेज़ी के प्रयोग को यथावत रखने का विधि द्वारा कोई उपबंध कर सकेगी।
4. अनुच्छेद 344 राष्ट्रपति को संविधान के प्रथम पाँच वर्ष तथा दस वर्ष पश्चात् राजभाषा आयोग नियुक्त करने का आदेश देता है।
5. राज्यों की राजभाषा/राजभाषाओं का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 345 में किया गया है।
6. राजभाषा हिंदी के विकास की व्यवस्था का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 351 में किया गया है। इसके अनुसार "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक हो या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"

राजभाषा अधिनियम 1963 में पारित किया गया, जिसकी धारा 3(3) बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके अनुसार कार्यालयों से नोटिस्, करार, संविदाएँ, टेंडर, संकल्प, परिपत्र एवं सामान्य आदेश आदि कागज़ात अनिवार्य रूप से द्विभाषी जारी होने चाहिए।

राजभाषा अधिनियम 1963 को वर्ष 1967 में संशोधित किया गया।

राजभाषा अधिनियम की धारा 8 के अधीन वर्ष 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए, जिसके अनुसार पूरे भारत को भाषायी दृष्टि से तीन क्षेत्रों 'क', 'ख', 'ग' में बाँटा गया है।

1. 'क' क्षेत्र : बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली और संघ शासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह।
2. 'ख' क्षेत्र : गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब एवं संघ शासित राज्य क्षेत्र चंडीगढ़ ।
3. 'ग' क्षेत्र : तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, केरल, मणिपुर, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, गोआ एवं अन्य शेष राज्य।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 एवं 7 में प्रावधान किया गया है कि कार्यालयों द्वारा हिंदी में प्राप्त हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में ही देना है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

राजभाषा नियम 1976 के नियम 8 (4) के अनुसार हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी को हिंदी में कार्य करने हेतु आदेश द्वारा विनिर्दिष्ट किया जा सकता है।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के अंतर्गत जिन कार्यालयों के 90 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो जाता है, उन्हें भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित कर दिया जाता है।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार–

- कार्यालय–प्रधान का दायित्व है कि वह अपने कार्यालय में राजभाषा आदेशों का अनुपालन करे।
- नियम 12 के अनुसार प्रशासनिक प्रधान राजभाषा आदेशों को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु जाँच पड़ताल के उपाय करें और जाँच बिंदु बनाएँ।
- नियम 12 के अनुसार प्रशासनिक प्रधान राजभाषा आदेशों की जानबूझकर अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई कर सकते हैं।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के अंतर्गत 1976 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया। संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष केंद्रीय गृहमंत्री होते हैं। इस समिति की तीन उप–समितियाँ हैं। संसदीय राजभाषा समिति में कुल तीस सदस्य होते हैं। इनमें से बीस सदस्य लोकसभा से और दस सदस्य राज्यसभा से होते हैं। बैंकों और वित्तीय संस्थानों के निरीक्षण का कार्य तीसरी उप–समिति कर रही है।

1963 के राजभाषा अधिनियम और 1976 के राजभाषा नियम के आधार पर हिंदी भाषी प्रदेशों (अर्थात् 'क' क्षेत्र) में बैंकों में कार्यालय आदेश, प्रेस विज्ञप्तियाँ, सूचना, करार, लाइसेंस, परमिट, लेखन सामग्री, पासबुक, चेक–बुक, बैंकों की तिमाही और छमाही रिपोर्ट आदि सभी हिंदी में ही होनी चाहिए। इसके साथ–साथ प्रशिक्षण कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ, प्रोत्साहन कार्यक्रम, विचार संगोष्ठियाँ आदि समय–समय पर हिंदी में करवानी चाहिए, जिससे अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि बनी रहे। बैंकों में अब मासिक और त्रैमासिक हिंदी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होने लगी हैं।

अतः कहा जा सकता है कि बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी का विकास तीव्र गति से हो रहा है, जिसका लाभ आम जनता को प्राप्त हो रहा है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बोध–प्रश्न

7. हिंदी के प्रयोग और प्रसार में वृद्धि हेतु भारत के संविधान के भाग 17 में 'संघ की राजभाषा' संबंधी प्रावधानों में शामिल हैं–
   (क) राष्ट्रपति द्वारा संविधान के प्रथम पाँच वर्ष तथा दस वर्ष पश्चात राजभाषा आयोग की नियुक्ति
   (ख) हिंदी भाषा का प्रसार एवं विकास संघ (केन्द्र) का कर्त्तव्य
   (ग) शब्द भंडार हेतु मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण
   (घ) उपर्युक्त सभी
8. राजभाषा अधिनियम को समय–समय पर संशोधित किया गया है। निम्न में से कौन से प्रावधान राजभाषा अधिनियम का भाग हैं?
   (क) पूरे भारत को भाषायी दृष्टि से तीन क्षेत्रों ('क', 'ख', 'ग') में बांटा जाना
   (ख) प्रशासनिक प्रधान को राजभाषा आदेशों की जानबूझकर अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई का अधिकार
   (ग) बैंकों और वित्तीय संस्थानों के निरीक्षण का कार्य तीसरी उपसमिति द्वारा
   (घ) उपर्युक्त सभी

1.7 संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग

संपर्क भाषा से अभिप्रायः उस भाषा से है, जो समाज के विभिन्न वर्गों या भाषा–भाषियों के बीच सेतु के रूप में काम आती है। वास्तव में, संपर्क भाषा भिन्न–भिन्न बोली बोलने वाले अनेक वर्गों के बीच भावों और विचारों के आदान–प्रदान के सक्षम माध्यम के रूप में उपस्थित होती है। डॉ. महेंद्र सिंह राणा के शब्दों में, "परस्पर विरोधी भाषा या भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से दो व्यक्ति, दो प्रदेश, राज्य और केंद्र तथा दो देश संपर्क स्थापित कर पाते हैं, उस भाषा विशेष को संपर्क भाषा/संपर्क साधक भाषा कहा जा सकता है।" (डॉ. महेंद्र सिंह राणा– *'प्रयोजन मूलक हिंदी के आधुनिक आयाम'*– पृ.79)

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर जन सामान्य की संपर्क भाषा की मुख्य विशेषता उसकी बोलचाल की प्रयुक्ति तथा सरलता होती है। ऐसी भाषा पारिभाषिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली से बोझिल नहीं होती। प्रशासनिक स्तर पर भी राजभाषा का प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में किया जाता है। उस भाषा में व्याकरण के सभी नियमों का पालन एवं प्रयोग करना संभव होता है। इस प्रकार राजभाषा भी औपचारिक रूप में देश की संपर्क भाषा ही है। भाषा के प्रयोजन के औपचारिक रूप में भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही स्वीकृति पाती चली गई।

आमतौर पर जब भी हम यात्रा करते हैं, चाहे बस या रेलगाड़ी में हों, चाहे समुद्री या हवाई–यात्रा में हों, हम देखते हैं कि अलग–अलग भाषा–भाषी अपना सफर एक साथ करते हैं। उस समय वे अगर अपनी भाषा के माध्यम से संपर्क नहीं कर पाते, तो वे अंग्रेज़ी या हिंदी से अपना काम चलाते हैं।

भारत की अधिकांश जनता ने हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपना लिया है। संविधान के अनुच्छेद–351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिया गया है तथा उसके प्रचार–प्रसार के रूप में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में बढ़ाने पर बल दिया गया है। इस अनुच्छेद में हिंदी का ऐसा विकास करने का प्रावधान दिया गया, जिसमें हिंदुस्तानी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली का प्रयोग कर अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

एक सर्वेक्षण के आधार पर यह देखा गया है कि भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसे भारत के अधिक से अधिक लोग अपने विभिन्न दैनिक कार्यों के लिए या मनोरंजन से संबंधित, सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक उद्देश्यों से आदान–प्रदान के लिए और परस्पर संपर्क के लिए प्रयोग करते हैं।

सार रूप में कहा जा सकता है कि संपर्क भाषा वह भाषा है, जो विभिन्न व्यक्तियों, राज्यों एवं देशों को जोड़ने का कार्य करती है। यह देश के विभिन्न क्षेत्रीय और स्थानीय साहित्य–कलाओं और विभिन्न संस्कृतियों को व्यक्त करने का माध्यम बनती है और लोग उसे मन से स्वीकार करते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बोध–प्रश्न

9. संपर्क भाषा निम्न में से किन के बीच संपर्क स्थापित करने में सहायक होती है?

(क) दो व्यक्ति (ख) दो प्रदेश

(ग) दो देश (घ) उपर्युक्त सभी

10. यात्रा के निम्न में से कौन से स्वरूप में संपर्क भाषा संवाद हेतु सहायक सिद्ध होती है?

(क) बस यात्रा (ख) रेल यात्रा

(ग) हवाई यात्रा (घ) उपर्युक्त सभी

1.8 बंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी और हैदराबादी हिंदी का प्रयोग

संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो अपने हृदय में उत्पन्न भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सही–सटीक प्रयोग करता है। मनुष्य के विकास क्रम में भाषा का भी निर्माण हुआ। समाज में रहते हुए मनुष्य को एक–दूसरे से संपर्क साधने एवं विविध कार्यों को संपन्न करने के लिए भाषा की आवश्यकता हुई। भाषा पूर्ण रूप से सामाजिक वस्तु है। जन्म के समय बच्चों में कोई प्रत्यक्ष भाषा क्षमता नहीं होती। माता और परिवार से ग्रहण की गई भाषा की सहायता से धीरे–धीरे समाज के साथ संबंध बनाने से एवं शिक्षक के द्वारा उसमें सही–सही बोलने की क्षमता उत्पन्न होती है। भाषा संचित संपत्ति है। यह निरंतर परिवर्तनशील होती है। इसमें निरंतर विकास की संभावनाएँ विद्यमान रहती हैं।

भाषा की परिभाषा अलग–अलग विद्वानों ने अपने मतानुसार इस प्रकार प्रस्तुत की है–

डॉ. मंगलदेव शास्त्री ने कहा है– "भाषा मनुष्य की उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शारीरिक अवयवों से उच्चारण किए गए वर्णनात्मक या भावात्मक शब्दों द्वारा अपने आप को प्रकट करते हैं। भाषा अभिव्यक्ति का वह साधन है, जिससे हम मौखिक और लिखित शब्दों द्वारा भाव और विचार व्यक्त कर सकते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार– "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से उच्चरित वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।" (डॉ. महेंद्र सिंह राणा– *'प्रयोजन मूलक हिंदी के आधुनिक आयाम'* –पृ. 80)

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

जैसा कि हम जानते हैं, हिंदी भाषा विचार–विनिमय का सशक्त माध्यम है। भारत में एक कहावत प्रचलित है–

'कोस–कोस पर बदले पानी, और चार कोस पर वाणी।'

बंबइया हिंदी का प्रयोग

बंबइया हिंदी मुख्यतः महाराष्ट्र में बोली जाती है। बंबइया हिंदी का प्रयोग क्षेत्र वृहत है। इसका प्रयोग मुख्यतः हिंदी फिल्मों में देखने को मिलता है। आरंभ में, बंबइया या फ़िल्मी हिंदी का प्रयोग बदमाशों, गुंडों और निम्न लोगों की भाषा के रूप में किया जाता था। बंबइया हिंदी में प्रचलित शब्द और उनके द्वारा उत्पन्न अर्थ विशेष माध्यम से व्यक्त होता हुआ दिखाई देता है। जैसे अपुन, तेरे को, मेरे को', 'खोपचा', 'कायको' आदि शब्द देखने को मिलते हैं। इसका उदाहरण हिंदी फिल्मों में दिखाई देता है, जहाँ बंबइया हिंदी का प्रयोग होता है। फिल्म 'मुन्ना भाई' में संजय दत्त किस प्रकार से बंबइया हिंदी का प्रयोग करता हुआ दिखाई देता है और उसका आस–पास का वातावरण भी उसमें लिप्त होता है। उसी प्रकार 'कंपनी' फिल्म में भी बदमाशों एवं गुंडों से संबंधित भाषा का प्रयोग दिखाया गया है या अन्य रूप में किसी भी तरह का अपराधी अंडरवर्ल्ड की फिल्म में भी इसी तरह की भाषा का प्रयोग करता है।

कलकतिया हिंदी का प्रयोग

कलकतिया हिंदी का प्रयोग क्षेत्र मूलतः कोलकाता माना जाता है। पश्चिम बंगाल राज्य की राजधानी कोलकाता के नाम से जानी जाती है। कला, इतिहास और साहित्य के क्षेत्र में कोलकाता ने अहम भूमिका निभाई है। अतः देखा जा सकता है कि कोलकाता पर बंगाल का प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी क्षेत्र में मौजपुर प्रदेश के कई लोग कोलकाता में आश्रित हो गए, इसलिए उनका भी प्रभाव इस पर दिखाई देता है। कोलकाता में हिंदी का काफी पुराना इतिहास देखा जा सकता है। हिंदी के विकास में पश्चिम बंगाल का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इतिहास साक्षी है कि बंगाल से ही पूरे भारत में नव जागरण का शंखनाद हुआ। कोलकाता स्थित फोर्ट विलियम कॉलेज में बांग्ला और हिंदी का अध्ययन–अध्यापन एक साथ ही आरंभ हुआ। कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और हिंदी आधुनिक साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी के प्रचार–प्रसार

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजा राममोहन राय भी कहते हैं कि 'हिंदी से ही समग्र भारत को एक सूत्र में बांधा जा सकता है'।

कोलकाता एक बहुभाषी महानगर है, जिसमें हर प्रांत के लोग रहते हैं। यहाँ की प्रमुख भाषा बांग्ला है, उसके बाद हिंदी का बोलबाला है। साहित्य, व्यवसाय, मनोरंजन के आधार पर देखा जाए, तो हिंदी महत्त्वपूर्ण रूप से विकास कर रही है। कोलकाता में भाषा के सांस्कृतिक रूप को अधिक महत्त्व दिया जाता है और इसका उपनाम 'सांस्कृतिक कोलकाता' भी कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कोलकाता में अधिकांश लोग बांग्ला भाषा बोलते हैं और अन्य लोग राजधानी में भोजपुरी, मैथिली आदि भाषा भी बोलते हैं। इन दोनों वर्गों की भाषाओं के मिलन से 'कलकतिया हिंदी' का जन्म और विकास हुआ और यह सामान्य बोलचाल, व्यापार और बाजार की भाषा बन गई।

हैदराबादी हिंदी

मध्य काल और आधुनिक युग में विभिन्न मुस्लिम शासकों ने हैदराबाद पर शासन किया। इसी कारण हैदराबाद में शुरू से ही उर्दू का प्रचलन हुआ और आधुनिक युग तक बोलचाल की उर्दू या हिंदुस्तानी जन सामान्य की संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित हुई। इसी तरह दक्षिण में अनेक स्थानों पर नवाबों और सुल्तानों का अधिकार होने के कारण उर्दू का ही प्रचलन रहा। इसी कारण आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में उर्दू जन सामान्य की भाषा और संपर्क भाषा के रूप में चलती रही और बाद में उर्दू मिश्रित हिंदी भाषा के प्रयोग को बल मिला। हैदराबादी हिंदी आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में बोली जाती है। यह दक्खिनी, मराठी एवं तेलुगू के मिलन से बनी है और हैदराबाद में सामान्य बोलचाल के लिए जैसे बाजार, हाट और व्यापार की भाषा के रूप में देखी जा सकती है।

हैदराबाद की हिंदी पर स्थानीय भाषा तेलुगु का असर भी दिखाई पड़ता है। हैदराबाद में 'मुझे चाहिए' के लिए 'मेरे को होना', 'क्या चाहिए', के लिए 'क्या होना' आदि का प्रयोग होता है। हिंदी भाषा वहाँ एक बोलचाल का रूप है, जिसमें लोग परस्पर अपने विचार रखते हैं। उससे भिन्न एक परिनिष्ठित, साहित्यिक रूप है जो सामान्य होते हुए भी किसी का अपना नहीं है। बोलचाल की भाषा में स्थानीय पुट मिलता है, चाहे बोलियों का हो या स्थानीय भाषाओं का; उसकी शब्दावली आम आदमी के दैनिक व्यवहार की होती है और वह सामान्य संपर्क का सशक्त माध्यम है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बोध–प्रश्न

11. निम्न में से वह कौन–सा प्राणी है जो अपने हृदय में उत्पन्न भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सही–सटीक प्रयोग करता है?

(क) तोता (ख) मनुष्य

(ग) चिंपांजी (घ) बंदर

12. अपुन, खोपचा, कायको आदि शब्द हिंदी के कौन से प्रकार से संबद्ध हैं?

(क) कलकतिया हिंदी (ख) बंबइया हिंदी

(ग) हैदराबादी हिंदी (घ) इनमें से कोई नहीं

1.9 निष्कर्ष

समग्रतः कहा जा सकता है कि व्यावहारिक हिंदी भारत के जन सामान्य और विशिष्ट वर्ग के समस्त औपचारिक कार्यों यथा कार्यालयी, व्यापारिक, वैज्ञानिक, शैक्षिक, प्रशासनिक, विधिक ही नहीं, अपितु समग्र भारतीयों को एक दूसरे से जोड़ने, उनके मध्य संपर्क स्थापित करने के अपने दायित्व को अत्यंत निष्ठापूर्वक ढंग से निभा रही है। बहुभाषी भारत में स्थानीय भाषाओँ की अनेकता के इस संदर्भ में हिंदी का विशेष महत्त्व है और इसका प्रयोग हम विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूपों में करते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर आम बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व अति प्राचीन है। यह भाषा लगभग ढाई सौ वर्षों से देश में संपर्क की भाषा रही है और देश की एक प्रमुख भाषा के रूप में अपना स्थान बना चुकी है। जनजीवन के विभिन्न आधारों पर, विभिन्न भूमिकाओं में इसका अपना महत्त्व है, जिसे कोई नकार नहीं सकता।

1.10 शब्दावली

- **अभिव्यक्ति** – प्रकट करना
- **प्रयोजनमूलक** – विशेष प्रयोजन हेतु विशिष्ट भाषिक संरचना युक्त हिंदी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

- **अनूदित** – भाषांतरित, एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित
- **विधिक** – विधि संबंधी, कानून संबंधी
- **आशुलिपिक** – शार्टहैंड में लिखने वाला (स्टैनोग्राफर)
- **टंकणकर्त्ता** – टाइपराइटर मशीन या कंप्यूटर पर टाइप करने वाला (टाइपिस्ट)
- **कार्मिक** – कर्मचारी
- **संगोष्ठी** – किसी विषय पर चर्चा हेतु बैठक या सम्मेलन

1.11 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)	2. (घ)	3. (क)	4. (घ)
5. (घ)	6. (घ)	7. (घ)	8. (घ)
9. (घ)	10. (घ)	11. (ख)	12. (क)

1.12 अभ्यास–प्रश्न

1. व्यावहारिक हिंदी के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. व्यावहारिक हिंदी के विविध प्रयोग पर अपने विचार लिखिए।
3. बैंकों में प्रयोग होने वाली हिंदी की उपयोगिता बताइए।
4. संपर्क भाषा के प्रयोग पर प्रकाश डालिए।
5. कलकतिया हिंदी और हैदराबादी हिंदी की दो विशेषताएँ बताइए।

1.13 संदर्भ–ग्रंथ

- बाहरी, हरदेव, *'हिंदी भाषा'* – अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

टिप्पणी

- झाकटे, दंगल, *'प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग'* – वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2010
- तिवारी, भोलानाथ, *'मानक हिंदी का स्वरूप'* – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2008
- ओमप्रकाश (डॉ.), *'व्यावहारिक हिंदी एवं प्रयोग'* – राजपाल एंड संस, संस्करण–2003
- गौतम, रमेश (सं.), *'प्रायोगिक हिंदी'* – ओरिएंट ब्लैकस्वान, प्रकाशन संस्करण–2013

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

इकाई II: संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विविध रूप

पाठ 2 : सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग और अनुभव-लेखन

पाठ 3 : बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली

टिप्पणी

पाठ : 2

सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग और अनुभव–लेखन

डॉ. शैलेश शुक्ला
एनएमडीसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम)
हीरा खनन परियोजना, मझगवाँ, पन्ना (मध्य प्रदेश)

रूपरेखा

2.1 अधिगम का उद्देश्य
2.2 प्रस्तावना
2.3 सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग
  2.3.1 अस्पताल में हिंदी का प्रयोग
  2.3.2 बाज़ार में हिंदी का प्रयोग
  2.3.3 मॉल में हिंदी का प्रयोग
  2.3.4 मंडी में हिंदी का प्रयोग
2.4 अनुभव–लेखन
  2.4.1 हिंदी में बाज़ार दौरे का अनुभव–लेखन
  2.4.2 दर्शनीय स्थल भ्रमण का अनुभव–लेखन
  2.4.3 क्रिकेट मैच देखने का अनुभव–लेखन
2.5 निष्कर्ष
2.6 शब्दाबली
2.7 बोध–प्रश्नों के उत्तर
2.8 अभ्यास–प्रश्न
2.9 संदर्भ–ग्रंथ

2.1 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी–

- संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विविध रूपों को समझने और उनका मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे;

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

टिप्पणी

- हिंदी भाषा की विविधता को समझ सकेंगे;
- हिंदी भाषा भारतीय समाज के विभिन्न स्तरों पर कैसे अपनाई गई है, इससे अवगत हो पाएंगे;
- सामाजिक संवाद में हिंदी का प्रयोग सीखेंगे;
- अस्पताल, बाज़ार, मॉल, और मंडी जैसे सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी के प्रयोग में सहज हो पाएंगे;
- व्यवहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखेंगे;
- बाज़ार, दर्शनीय स्थलों, और क्रिकेट मैच जैसे विभिन्न परिदृश्यों में हिंदी के प्रयोग के वास्तविक अनुभवों और इसके प्रयोग की व्यावहारिकता को समझेंगे।

इस पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के संपर्क भाषा के रूप में विविध रूपों की गहराई से समझ प्रदान करना है, जिससे वे इस ज्ञान को अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में लागू कर सकें।

2.2 प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ भाषाओं की भी अपनी एक अनूठी विविधता है। हिंदी, इस विविधतापूर्ण भूमि की संपर्क भाषा के रूप में, न केवल एक व्यापक संचार माध्यम है बल्कि एक सांस्कृतिक सेतु है जो विभिन्न भाषाई, क्षेत्रीय, और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाती है। प्रस्तुत अध्याय में हम **'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विविध रूपों'** पर चर्चा करेंगे, जिससे हमें इस भाषा की व्यापकता और इसके विभिन्न संदर्भों में प्रयोग की गहराई को समझने में मदद मिलेगी।

हिंदी भारत की राजभाषा होने के नाते लाखों लोगों की पहली या दूसरी भाषा है। यह न केवल शिक्षा, प्रशासन और मीडिया में प्रमुखता से उपस्थित है, बल्कि दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में इसका व्यापक प्रयोग होता है। हिंदी का यह विस्तार विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के साथ इसके अनूठे सम्मिश्रण को दर्शाता है, जिससे यह न केवल संवाद का एक माध्यम बनती है बल्कि एक सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी बनती है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

सार्वजनिक स्थानों पर, जैसे कि अस्पताल, बाज़ार, मॉल, और मंडी में, हिंदी का प्रयोग दैनिक व्यापार, सूचना का आदान–प्रदान, और सामाजिक अंतःक्रिया के लिए होता है। ये स्थान हिंदी के विभिन्न रूपों के प्रयोग का केंद्र बन जाते हैं, जहाँ आधिकारिक भाषा और स्थानीय बोलियों का मेल होता है। इस तरह, हिंदी न केवल संचार की एक भाषा के रूप में कार्य करती है बल्कि सामाजिक समावेशन का एक माध्यम भी बनती है। इस प्रकार हिंदी विभिन्न सार्वजनिक स्थानों में एक ऐसे सेतु का काम करती है, जो विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के लोगों को एक सामान्य मंच पर लाती है।

बाज़ार, दर्शनीय स्थलों, और क्रिकेट मैच जैसे अवसरों पर, हिंदी सामाजिक संवाद का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन जाती है। इन परिस्थितियों में हिंदी का प्रयोग न केवल मनोरंजन और आनंद के लिए होता है बल्कि सामाजिक सहभागिता और सामूहिक अनुभवों के लिए भी होता है। यहाँ, हिंदी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचानों को आकार देने वाली भाषा के रूप में उभरती है।

इस पाठ का उद्देश्य हिंदी भाषा के इन्हीं विविध रूपों और संदर्भों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करना है। हम हिंदी के व्यापक प्रयोग और इसके सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक महत्त्व को समझने का प्रयास करेंगे। इस पाठ के माध्यम से, हम न केवल हिंदी भाषा के विविध पहलुओं को उजागर करेंगे बल्कि इस भाषा के प्रति हमारी समझ और सराहना को भी गहरा करेंगे। इस प्रकार, हम हिंदी के संपर्क भाषा के रूप में विविध रूपों की जटिलता और सौंदर्य को समझने की दिशा में एक कदम बढ़ाएँगे।

2.3 सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग

सार्वजनिक स्थानों में हिंदी का प्रयोग एक महत्त्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह एक व्यापक सामाजिक एवं व्यावसायिक परिस्थिति का हिस्सा है। सार्वजनिक स्थानों में, जैसे कि अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, बाज़ार, मॉल और मंडी आदि में हिंदी का प्रयोग अद्वितीय रूप से होता है जो दैनिक व्यापार, सूचना आदान–प्रदान, और सामाजिक अंतःक्रिया को आसान बनाता है। इन स्थानों पर हिंदी का उपयोग समाज में समृद्धि और एकता को बढ़ावा देता है, जहाँ आधिकारिक भाषा और स्थानीय बोलियों का मेल होता है। इसके परिणामस्वरूप, हिंदी सिर्फ संवैधानिक या प्रचार–प्रसार की एक भाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि एक समृद्धि

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

और सामाजिक समृद्धि का स्रोत भी बन जाती है। इस प्रयोग के माध्यम से हम संवाद, ज्ञान, और विमर्श में सुधार कर सकते हैं। इस पाठ में, हम विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी के प्रयोग की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे।

2.3.1 अस्पताल में हिंदी का प्रयोग

अस्पताल में हिंदी भाषा जनता की बीमारियों और स्वास्थ्य सेवाओं संबंधी सूचनाओं का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। अस्पताल, जो स्वास्थ्य सेवाओं का केंद्र है, में हिंदी का प्रयोग किसी भी स्थिति में महत्त्वपूर्ण है। यहाँ हिंदी के माध्यम से सही समझदारी और आत्मविश्वास से भरपूर रूप से व्यक्ति अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है। विशेषज्ञता, दवाओं की जानकारी, और निर्देशों का स्पष्ट विवेचन हिंदी में होना चाहिए। अस्पतालों में हिंदी का प्रयोग रोगी के साथ संवाद को सुधारने का एक अच्छा तरीका हो सकता है। इस संदर्भ में, अस्पतालों में हिंदी का सशक्त प्रयोग कैसे हो सकता है, इस पर विचार करेंगे। वहाँ स्वास्थ्य सेवाओं की समझ में सुधार के लिए हिंदी में विवेचना, स्वास्थ्य सलाहकारों की भाषा का सुधार और रोगी से संपर्क करते समय हिंदी के सही प्रयोग के बारे में चर्चा करेंगे।

अस्पताल में हिंदी का प्रयोग करना एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जो स्वास्थ्य सेवाओं को सामाजिक रूप से पहुँचाने में मदद करता है। यह न केवल रोगियों को सही सलाह प्रदान करने में सहायक होता है, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास भी दिलाता है कि उन्हें उनकी भाषा में सही सेवा मिल रही है।

अस्पताल में हिंदी का प्रयोग रोगियों की समझ में सुधार करता है। रोगियों को उनकी समस्याओं का सही जवाब मिलने में मदद होती है– जब उन्हें उनकी मातृभाषा में जानकारी दी जाती है।

अस्पताल में प्रयोग होने वाले कुछ प्रमुख वाक्य–

1. आपका स्वास्थ्य कैसा है?
2. आपको कहाँ दर्द हो रहा है?
3. कृपया अपना नाम बताएँ।
4. आपकी उम्र क्या है?
5. क्या आपका बुढ़ापे की बीमारियों से सामना हुआ है?

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

6. आपने पिछले एक हफ्ते में कोई दवा ली है?
7. आप अपने खानपान का ख्याल कैसे रखते हैं?
8. बीमारी कब से शुरू हुई?
9. आपका ब्लड प्रेशर कैसा है?
10. क्या आपने अब तक किसी और डॉक्टर से इस बारे में बातचीत की है?
11. क्या आपको अब किसी तरह की समस्याएँ हो रही हैं?
12. क्या आपको कोई गंभीर बीमारी है?
13. आपने आखिरी बार किस बीमारी के लिए टीका लगवाया?
14. क्या आपने किसी ऐसी चीज का सेवन किया है जिससे आपको एलर्जी हो सकती है?
15. आपका वजन कितना है?
16. आपको किसी अन्य समस्या का सामना करना पड़ रहा है?
17. आपने आखिरी बार कब खाना खाया?
18. क्या आपको कोई ऐसी बीमारी हैं जो आपको चिंतित कर रही हैं?
19. कृपया अपनी बीमारियों संबंधी इतिहास बताएँ।
20. आपको किस प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता है?
21. क्या आपने अपनी जाँच से संबंधित कोई अन्य जानकारी दी है?
22. क्या आपने किसी और डॉक्टर की सलाह ली है इस बारे में?
23. क्या आप इस बारे में सुनिश्चित हैं कि आपकी रिपोर्ट सही है?
24. आपको ब्लड टेस्ट के लिए कहा गया है, कृपया यहाँ टाइम स्लॉट लें।
25. कृपया अपने विभाग का पता बताएँ।
26. क्या आपको किसी विशेषज्ञ की सलाह चाहिए?
27. यदि आपको आगे के टेस्ट के लिए बुलाया जाए, तो उसके लिए तैयार रहें।
28. आपको किसी विशेष इलाज की आवश्यकता है?

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

29. क्या आप सर्जरी के लिए तैयार हैं?
30. यह आपका दवा– प्रेस्क्रिप्शन है, कृपया इसे सही तरीके से समझें।
31. क्या आपने इससे पहले किसी तरह की दूसरी चिकित्सा ली है?
32. कृपया किसी तरह की एलर्जी या संबंधित समस्या के बारे में सूचित करें।
33. यदि आपको दर्द है, तो इसका स्तर कितना है और कब से हो रहा है?
34. आपकी किसी चिकित्सक के साथ पहले हुई अन्य चिकित्सा के बारे में बताएँ।
35. आपको कौनसी समस्या है जिसके लिए आप यहाँ हैं?
36. आपने इस बारे में पहले और किसी डॉक्टर से बात की है?
37. आपको जो जानकारी दी गई है, क्या आप वो सब समझते हैं?
38. यदि आपकी रिपोर्ट्स में कुछ आवश्यक हो, तो कृपया विभाग में जाएँ।
39. आपकी चिकित्सा की स्थिति के बारे में आपके परिवार को सूचित किया गया है, क्या आप इसके बारे में जानते हैं?

इन प्रमुख वाक्यों के माध्यम से अस्पताल में हिंदी में संवाद सुनिश्चित किया जा सकता है। हिंदी में संवाद को सही तरीके से समझने पर रोगी को उचित और संवेदनशील चिकित्सा प्रदान करने में मदद मिलती है।

2.3.2 बाज़ार में हिंदी का प्रयोग

बाज़ार, जो हमारे दैनिक और आर्थिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, में हिंदी का प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ हिंदी का प्रयोग हमें विभिन्न तरह के लोगों के साथ संवाद स्थापित करने में सहायक होता है और विभिन्न वर्गों को समृद्धि और सामाजिक एकता में बाँधता है।

बाज़ार में हिंदी का प्रयोग एक सामाजिक मेलजोल का माध्यम है, जो अलग–अलग क्षेत्रों और वर्गों के लोगों को एक साथ मिलकर चलने का एक तरीका बनाता है। यहाँ हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह एक भाषा है जो समृद्धि, विविधता, और एकता को बढ़ावा देती है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बाज़ार में प्रयोग होने वाले हिंदी के कुछ प्रमुख वाक्य–

1. नमस्ते! मैं कैसे आपकी मदद कर सकता हूँ?
2. कृपया यहाँ बैग देखें।
3. इस बार सेल से क्या लिया जा सकता है?
4. आपको कौन सा रंग पसंद है?
5. यह साड़ी किस ब्रांड की है और इसका क्या मूल्य है?
6. आपको बैग के साथ यह जूते कैसे लग रहे हैं?
7. कृपया इस टी–शर्ट की कीमत बताएँ।
8. क्या यह स्वेटर लंबे समय तक चलेगा?
9. क्या आपके पास फॉर्मल कपड़े हैं?
10. यहाँ ब्रांडेड शूज हैं, आपको देखना चाहिए।
11. क्या आपको इन जूतों का बड़ा साइज़ मिल जाएगा?
12. इस जूते का सोल बहुत अच्छा है।
13. आपको इन स्कार्फ्स में से कौनसा पसंद है?
14. इस ब्रांड के लिए वारंटी कितने समय की है?
15. कृपया यह बैग दिखाएँ। क्या आप इसका दाम कम कर सकते हैं?
16. इस शॉप में सेल कब से शुरू हो रही है?
17. आपके पास फ्रेश स्टॉक कब आएगा?
18. क्या आपके पास और डिजाइन हैं?
19. इस ट्राउज़र का साइज़ चेक करने के लिए चेंजिंग रूम है क्या?
20. क्या आपके पास इस कोट के साथ मैचिंग वाली शर्ट है?
21. क्या यह घड़ी स्टेनलेस स्टील की है?
22. इस बैग के साथ मैचिंग वॉलेट है क्या?
23. कृपया इस ब्रांड के जूते दिखाएँ।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

24. आपके पास कुछ आरामदायक स्वेटशर्ट हैं क्या?
25. यह ट्राउज़र बदल सकता है क्या?
26. क्या आपके पास अलग–अलग रंगों की चादर हैं?
27. यह कमीज़ कितनी पारंपरिक है?
28. इस जूते में साइज कितनी तरह का है?
29. यह स्वेटर धूप में फीका नहीं होगा, ना?
30. कृपया इस जूते का साइज़ चार्ट दिखाएँ।
31. आपके पास साड़ी के साथ मैचिंग ब्लाउज़ है क्या?
32. इस जूते की क्वालिटी बहुत अच्छी है।
33. कृपया इस कपड़े का ऊपरी कवर दिखाएँ।
34. आप इसे घड़ी की बैटरी के साथ बेच सकते हैं क्या?
35. यह स्कर्ट वॉशेबल है ना?
36. कृपया इस सूटकेस के विभिन्न रंग दिखाएँ।
37. आपके पास इस जूते का बॉक्स है क्या?
38. इस स्वेटर की कीमत कुछ कम हो सकती है क्या?
39. आपके पास और कुछ सेल आइटम्स हैं क्या?

इन प्रमुख वाक्यों के माध्यम से बाज़ार में हिंदी में संवाद करना और बाज़ार में खरीदारी करना सुविधाजनक हो सकता है

2.3.3 मॉल में हिंदी का प्रयोग

मॉल एक आधुनिक खरीदारी केंद्र है जहाँ लोग विभिन्न ब्रांड्स और वस्तुओं का चयन करते हैं। यह समृद्धि, विशालता, और विविधता का प्रतीक है। मॉल में हिंदी का प्रयोग एक ऐसी भाषा का रूप बनता है जो विभिन्न वर्गों और समृद्धि के साथ हमें एक साथ आने का अवसर देता है। मॉल के माध्यम से हिंदी में संवाद करना हमें आपसी समझ, सामाजिक समृद्धि और एकता का अनुभव कराता है। मॉल में हिंदी का प्रयोग विशेषकर विभिन्न भाषाओं

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

के लोगों के बीच एकता का साधन होता है। यहाँ व्यापारिक संवाद, ग्राहक सेवा और विभिन्न ब्रांडों के स्थानीय विपणी के साथ हिंदी में सहज और सुबोध होता है।

मॉल में प्रयोग होने वाले हिंदी के कुछ प्रमुख वाक्य–

1. शोरूम के बाहर– 'मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?'
2. इस कपड़े का मैचिंग साइज़ कहाँ है?
3. आपको इन ब्रांडेड जूतों में से कौनसा चाहिए?
4. कृपया इस जूते के और रंग दिखाएँ।
5. सेल आइटम्स में क्या–क्या है?
6. क्या आपके पास कोई डिस्काउंट ऑफर है?
7. इस स्वेटशर्ट की कीमत कम हो सकती है क्या?
8. कृपया एक बड़ा स्कूल बैग दिखाएँ।
9. आपके पास मजबूत ज्वेलरी बॉक्स हैं क्या?
10. यह लैपटॉप बैग ठीक रहेगा?
11. इस वॉच की गैरेंटी कितने समय की है?
12. आपके पास स्मार्टफोन के लिए अच्छे कवर्स हैं क्या?
13. कृपया इस टेनिस रैकेट का कवर दिखाएँ।
14. यह जूता अगले सप्ताह उपलब्ध रहेगा क्या?
15. इस फॉर्मल शर्ट का साइज़ कितना है?
16. आपके पास सोने के अच्छे गहने हैं क्या?
17. कृपया इस हैंडबैग का स्टॉक दिखाएँ।
18. यह घड़ी आपकी अपनी ब्रांड की है?
19. यह स्वेटर गर्मियों में उपयोगी होगा ना?
20. इस टेबलवेयर का मैचिंग सेट है क्या?
21. आपके पास बच्चों के लिए खिलौने हैं क्या?

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

22. कृपया इस वायरलेस हेडफोन का चार्जर दिखाएँ।
23. आपके पास इस ब्रांड की फैंसी ज्वेलरी है क्या?
24. इस विंडो के लिए कर्टेन्स की और वैरायटी हैं क्या?
25. यह सोफा और चेयर का कंबिनेशन डिज़ाइन है क्या?
26. इस जूते की बॉटम सोल कितनी आरामदायक है?
27. कृपया इस एक्सरसाइज़ मैट और बॉल का सेट दिखाएँ।
28. आपके पास लैपटॉप की टेबल है क्या?
29. इस ब्रांड के टॉयलेट्री आर्टिकल्स का स्टॉक दिखाएँ।
30. कृपया अपने रेस्टोरेंट का मेन्यू दिखाएँ।
31. यह लैम्प एंड लाइटिंग सेक्शन कहाँ है?
32. आपके पास इस जूते की डिज़ाइनर कलेक्शन है क्या?
33. कृपया इस सौंदर्य उत्पाद का सैम्पल दिखाएँ।
34. यह फोटोफ्रेम कितनी तस्वीरों को सहेज सकता है?
35. आपके पास इस रेडियो के लिए अच्छा कवर है क्या?

इन प्रमुख वाक्यों के माध्यम से मॉल में हिंदी में संवाद करने का अनुभव ग्राहकों को बेहतर और किफ़ायती खरीदारी करने में सहायक हो सकता है।

2.3.4 मंडी में हिंदी का प्रयोग

मंडी, जो अनाज, सब्जियों और फलों के क्रय–विक्रय केंद्र होती है, में हिंदी का प्रयोग एक महत्त्वपूर्ण और सामाजिक रूप से प्रचलित भाषा है। यहाँ ग्राहकों, खुदरा व्यापारियों, और उपभोक्ताओं के बीच विभिन्न संवादों के माध्यम से हिंदी का प्रयोग आसान एवं उपयुक्त होता है। मंडी हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है, और यहाँ हिंदी का प्रयोग विभिन्न रूपों में होता है। ग्राहकों, खुदरा व्यापारियों, और उपभोक्ताओं के बीच संवाद में हिंदी एक सामाजिक सांस्कृतिक मेलजोल का स्रोत बनती है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

मंडी में प्रयोग होने वाले हिंदी के कुछ प्रमुख वाक्य–

1. नमस्ते! आपको किस अनाज की तलाश है?
2. कृपया इस सब्जी का दाम बताएँ।
3. यहाँ सभी सब्जियाँ ताजी हैं।
4. इस फल की खुशबू लाजवाब है।
5. कृपया लहसुन दिखाएँ।
6. इस दुकान का अनाज शानदार है।
7. कृपया इस गेहूँ के आटे की कीमत बताएँ।
8. यह तेल शुद्ध और स्वादिष्ट है।
9. इस छोटे बच्चे के लिए ताजे एवं स्वास्थ्यवर्धक फल दिखाएँ।
10. आपके पास बासमती चावल हैं क्या?
11. इस मक्खन का स्वाद अति–स्वादिष्ट है।
12. इस का खुदरा मूल्य कितना है?
13. कृपया इस दाल की पैकेजिंग दिखाएँ।
14. ये सुगंधित मसाले हैं।
15. इस मिठाई का नाम क्या है और दाम कितना है?
16. इस बंगाली बासमती चावल का स्वाद अद्‌भुत है।
17. यह सुपरमार्केट विभिन्न सामानों से भरा हुआ है।
18. इस चीनी की पैकेजिंग में कुछ नया दिखाएँ।
19. आपके पास नया अनाज भी है क्या?
20. इस अंडे की गुणवत्ता कैसी है?
21. कृपया इस दुकान के सबसे ताजे फल दिखाएँ।
22. यह बिरयानी मसाला कहाँ से आया है?
23. इस दालचीनी का दाम क्या है?
24. आपके पास उत्तर भारतीय मसाले हैं क्या?

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

25. कृपया इस खजूर को पैकेट खोलकर दिखाएँ।
26. यहाँ सब कुछ बहुत ही स्वादिष्ट लग रहा है।
27. इस स्थानीय बाज़ार में क्या स्पेशल मिलता है?
28. आपके पास ताजे फलों का स्टॉक है क्या?
29. कृपया ताजे टमाटर दिखाएँ।
30. इस धनिया का रेट कितना है, किलो के हिसाब से?
31. आपके पास विभिन्न प्रकार की दालें हैं क्या?
32. इस चाट का स्वाद कितना खास है?
33. इस अनाज पर कोई डिस्काउंट है क्या?
34. इस चने की क्वालिटी कितनी अच्छी है?
35. आपके पास अच्छी नमकीन हैं क्या?
36. यहाँ बिकने वाले बादाम विशेषज्ञ द्वारा चुने गए हैं।
37. कृपया इस बूटी से बने मसाले का नाम बताएँ।
38. क्या आपके पास ताजे फल हैं?

इन प्रमुख वाक्यों के माध्यम से हम देख सकते हैं कि मंडी में हिंदी का प्रयोग विभिन्न विषयों पर होता है, जो क्रय और विक्रय से संबंधित हैं।

बोध–प्रश्न

1. हिंदी भाषा एक व्यापक सामाजिक एवं व्यावसायिक परिस्थिति का हिस्सा है। निम्न में से किन सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी भाषा का प्रयोग अद्वितीय रूप से होता है?
   (क) अस्तपाल, बाजार (ख) स्कूल, कालेज
   (ग) मॉल, मंडी (घ) उपर्युक्त सभी
2. हिंदी का प्रयोग निम्न में से किन कार्यों को आसान बनाता है?
   (क) दैनिक व्यापार (ख) सूचना आदान–प्रदान
   (ग) सामाजिक अंतःक्रिया (घ) उपर्युक्त सभी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3. अस्पताल में मातृभाषा के प्रयोग से होने वाले लाभ हैं–
   (क) रोगियों की समझ में सुधार
   (ख) रोगी को सही जवाब मिलने में सहायता
   (ग) (क) और (ख) दोनों
   (घ) इनमें से कोई नहीं
4. बाजार में हिंदी के प्रयोग से होने वाले लाभों में शामिल हैं–
   (क) सामाजिक मेलजोल में सहायता
   (ख) समृद्धि एवं सामाजिक एकता को बढ़ावा
   (ग) (क) और (ख) दोनों
   (घ) इनमें से कोई नहीं
5. मॉल में हिंदी का प्रयोग किस प्रकार सहायक होता है?
   (क) दुकानदारों–ग्राहकों के बीच बेहतर संवाद
   (ख) बेहतर और किफायती खरीदारी
   (ग) (क) और (ख) दोनों
   (घ) इनमें से कोई नहीं
6. मंडी में हिंदी का प्रयोग किस प्रकार ग्राहकों एवं दुकानदारों के अनुभव को बेहतर करने में सहायक सिद्ध होता है?
   (क) क्या, क्यों, कैसे, कब, कहां जैसे प्रश्नों के सटीक उत्तर समझने में आसानी
   (ख) मोलभाव में सहजता
   (ग) बेहतर व्यापारिक संबंध बनाने में सहायक
   (घ) उपर्युक्त सभी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

2.4 अनुभव–लेखन

व्यक्ति का अनुभव उसके जीवन का अभिन्न हिस्सा है और इसे व्यक्त करने का एक अच्छा माध्यम है अनुभव लेखन। अनुभव लेखन का महत्त्व उसके विचार, भावनाओं और अनुभूतियों को दूसरों के साथ साझा करने में है।

अच्छे अनुभव लेखन के लिए सबसे पहले व्यक्ति को अपने अनुभवों को सही तरीके से दर्ज करने की आदत डालनी चाहिए। व्यक्ति में अपनी भावनाओं को भाषा में व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए, ताकि पाठक उसकी भावनाओं को सहजता से समझ सकें।

अच्छे अनुभव लेखन की एक विशेषता यह है कि व्यक्ति को अपनी भावनाओं को सहज भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए। व्यक्ति को अपने अनुभवों की गहराइयों में जाकर, और उन्हें सरल शब्दों में बदलकर पाठकों को सीधे रूप से संवेदनशीलता का अनुभव कराना महत्त्वपूर्ण है।

एक अच्छे अनुभव लेखन में, व्यक्ति को विस्तारपूर्वक और सुव्यवस्थित रूप से अपने अनुभवों का वर्णन करना चाहिए। अधिक विवरण और सुधार के साथ, पाठक अच्छे से उसके अनुभव की गहराइयों में समाहित हो सकता है।

अनुभव लेखन में व्यक्ति को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि उसकी भाषा रुचिकर और अभिव्यक्तिकता से भरपूर होनी चाहिए। साथ ही, उसे पाठकों के साथ अपना अनुभव साझा करने का उत्साह भी बनाए रखना चाहिए।

एक अच्छा अनुभव लेखन वह है जब हम अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण पलों को दूसरों के साथ साझा करते हैं और उन्हें अपनी सरल भाषा में समझाते हैं। यह एक सामाजिक और साहित्यिक रूप से अपनी बात कहने का एक शानदार माध्यम है, जिससे हमारी भावनाओं और विचारों को सहजता से साझा किया जा सकता है। इसमें हम अपने अनुभवों की गहराइयों को बड़े सरल शब्दों में ढालते हैं ताकि अन्य लोग भी हमारे साथ सहजता से जुड़ सकें। यह हमें एक संक्षिप्त बातचीत का एक सुंदर और सामाजिक मंच प्रदान करता है, जिससे हम अपने परिचितों एवं साथियों के साथ मिलकर अधिक मजबूत रिश्तों का निर्माण कर सकते हैं। इसके माध्यम से हम विभिन्न सामाजिक और भाषाई पृष्ठभूमि पर बातचीत करने का अवसर प्राप्त करते हैं, जैसे कि स्कूल, कॉलेज, या सामाजिक समारोह में। इसका महत्त्व है क्योंकि यह हमें

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

अपनी भाषा में सही ढंग से अपने विचारों को व्यक्त करने का एक आदर्श माध्यम प्रदान करता है, जिससे हमारे बीच संवेदनशीलता बढ़ती है और हम समृद्धि से संबद्ध होते हैं।

हिंदी में अनुभव–लेखन के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

2.4.1 हिंदी में बाज़ार दौरे का अनुभव–लेखन

बाज़ार का अनुभव अनेक प्रकार के मामलों में हमें सिखाता है। यह एक अनुभव है जो हर व्यक्ति को अलग–अलग ढंग से प्राप्त होता है। मेरा बाज़ार का अनुभव भी यही कुछ है।

पन्ना, मध्यप्रदेश का एक छोटा सा शहर है जो हीरों, वीरों और मंदिरों की नगरी के रूप में अपने ऐतिहासिक महत्त्व और प्राचीन संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। पिछले माह मैंने पन्ना के चौक बाज़ार, जो इस शहर की विविधता और जीवंतता का प्रतिबिंब है, में घूमने और खरीदारी का अनुभव प्राप्त किया।

पन्ना के चौक बाज़ार में पहुँचते ही मुझे वहाँ की रोटी–सब्जी की महक और गलियों में गूँजती हुई बाज़ार की हलचल से अच्छा अनुभव हुआ। मैंने वहाँ से अपनी रसोई के लिए आवश्यक सामान की खरीदारी की। चावल, दाल, मसाले और तेल की डिब्बे और अन्य सामान की खरीदारी ने मुझे यादगार अनुभव प्रदान किया। बाज़ार में एक मोबाइल दुकान पर गया, और मेरे मोबाइल का स्क्रीन गार्ड बदलवाने के लिए वहाँ के मोबाइल टेकनिशियन ने मेरी मदद की।

मेरे एक दोस्त ने मुझे बाज़ार के एक प्रसिद्ध रेस्तरां में खाने के लिए आमंत्रित किया। हम वहाँ बैठे और विभिन्न व्यंजनों का आनंद लिया। थोड़ी देर पहले हुई हल्की बारिश के कारण वहाँ की हवा में घुली मिट्टी की खुशबू और स्थानीय व्यंजनों की खुशबू ने हमारे मन को आनंदित कर दिया।

बाज़ार की एक और विशेषता थी– बृजवासी की मशहूर लस्सी। हमने बृजवासी से लस्सी का एक कुल्हड़ (स्पेशल लस्सी मिट्टी के कुल्हड़ में मिलती है) खरीद कर उसका स्वाद लिया। लस्सी गर्मियों में ठंडक प्रदान करती है और उसका स्वाद भी लाजवाब होता है।

इसके अलावा, बाज़ार में अन्य कई दुकानें थीं जहाँ वस्त्र, गहने, चप्पल और अन्य सामान खरीदे जा सकते थे। बाज़ार में भारतीय और पश्चिमी – दोनों संस्कृतियों का अद्‌भुत मिश्रण था।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

समय बिताने के बाद, मैंने पन्ना के चौक बाज़ार से एक अद्वितीय अनुभव हासिल किया। इस अनुभव ने मेरे मन को शांति और संतोष से भर दिया और मुझे पन्ना की संगीतमय और जीवंत रोचकता का परिचय करवाया। यहाँ की खासियतें और स्थानीय व्यंजनों की खुशबू ने मेरे अनुभव को यादगार बना दिया।

2.4.2 दर्शनीय स्थल भ्रमण का अनुभव–लेखन

मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में स्थित मझगवां से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित खजुराहो, एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि का केंद्र है। पिछले रविवार, मैंने खजुराहो की यात्रा की, जो मेरे लिए एक अत्यंत सुखद अनुभव साबित हुई।

खजुराहो पहुँचकर पहला दृश्य ही मनोहारी था। खजुराहो के मंदिरों का शानदार अभिनव आकार और विशालता स्थिर मनोहार कर रहे थे। स्थल के ऐतिहासिक मंदिर वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों के रूप में विख्यात हैं। इन मंदिरों की शिल्पकला, सौंदर्य और विस्तार से बनाए गए अद्‌भुत विमानों ने मुझे आश्चर्यचकित किया।

सबसे पहले मैंने खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर की यात्रा की। यह मंदिर खजुराहो के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, और इसका निर्माण 10वीं शताब्दी में हुआ था। मंदिर की शिल्पकला में विरासती स्थानीय और विदेशी शैलियों का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। मंदिर के प्रमुख गोपुर और मुख्य मंदिर ने मेरे मन को शांति और ध्यानमय कर दिया।

इसके बाद मैंने खजुराहो के अन्य प्रमुख मंदिरों की यात्रा की, जैसे कि कंदारिया महादेव मंदिर और चित्रकूट मंदिर। हर मंदिर का अपना महत्त्व है और विशेषता है, जो इन्हें और अधिक आकर्षक बनाती है।

यहाँ पर मंदिरों के अलावा भी कई दर्शनीय स्थल हैं, जैसे कि खजुराहो की चित्रकारीकृत झील, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम और रानी दुर्गावती स्मारक। ये स्थल इस क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व को और अधिक विस्तार से दर्शाते हैं।

दोपहर को मैंने होटल ललित में अपना भोजन किया। वहाँ की शानदार आंतरिक सजावट, स्वादिष्ट खाना और उत्कृष्ट सेवा ने मेरे दिन को और भी यादगार बना दिया। मैंने वहाँ प्याज कचौरी, लाल मिर्च के पकोड़े, दाल खिचड़ी, और मिठाई का आनंद लिया।

खजुराहो की यात्रा ने मुझे न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के साथ परिचित किया, बल्कि मुझे विश्वस्तरीय भोजन और आराम का भी अवसर प्रदान किया। इस

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

यात्रा ने मेरे मन को शांति और संतोष से भर दिया, और मैंने इसे एक अद्वितीय और यादगार अनुभव के रूप में संज्ञान में लिया।

2.4.3 क्रिकेट मैच देखने का अनुभव–लेखन

कुछ माह पहले अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में आयोजित क्रिकेट के महाकुंभ, वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल मैच में जब भारत और ऑस्ट्रेलिया आमने–सामने आए, तो प्रत्येक क्रिकेट प्रेमी की धड़कनें तेज हो गईं। इस महत्त्वपूर्ण मैच का उत्साह सिर्फ स्टेडियम में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में महसूस किया जा रहा था।

ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। भारत की शुरुआत में रोहित शर्मा और शुभमन गिल ने पारी को संभाला, लेकिन जल्द ही शुभमन गिल, रोहित शर्मा और श्रेयस अय्यर के विकेट गिर गए, जिससे भारत ने शुरुआती झटके खाए। विराट कोहली और के. एल. राहुल ने इसके बाद पारी को संभाला और मध्यक्रम में साझेदारी की, लेकिन ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के सामने वे ज्यादा बड़ी पारी नहीं खेल पाए। भारत ने अपनी पारी में 240 रन बनाए, जो कि एक चुनौतीपूर्ण स्कोर था लेकिन बहुत बड़ा स्कोर नहीं था।

ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी की शुरुआत में वे तीन बड़े विकेट जल्दी खो बैठे। हालाँकि, ट्रेविस हेड और मार्नस लाबुशेन ने मैच का रुख पलट दिया। ट्रेविस हेड की शानदार शतकीय पारी (137 रन, 120 गेंद) और मार्नस लाबुशेन के साथ उनकी 192 रनों की भागीदारी ने ऑस्ट्रेलिया को एक मजबूत स्थिति में पहुँचा दिया। यह साझेदारी न केवल ऑस्ट्रेलिया के लिए जीत का आधार बनी, बल्कि इसने भारतीय गेंदबाजों के लिए चुनौतियाँ भी पेश कीं। ऑस्ट्रेलिया ने इस लक्ष्य को 43 ओवरों में ही 4 विकेट खोकर हासिल कर लिया, जिससे वे 6 विकेट से विजयी हुए। ट्रेविस हेड को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मैच का 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया।

इस जीत ने ऑस्ट्रेलिया को विश्व कप की ट्रॉफी तक पहुँचाया और क्रिकेट के इतिहास में उनकी महानता को एक बार फिर से प्रमाणित किया। भारत के लिए, यह हार निराशाजनक थी, खासकर जब वे अपने घरेलू मैदान पर खेल रहे थे। फिर भी, भारतीय टीम ने टूर्नामेंट के दौरान कई यादगार पल प्रदान किए, जिससे उनके प्रशंसकों को गर्व महसूस हुआ।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

इस मैच ने क्रिकेट की भावना और खेल के प्रति जुनून को दिखाया। दोनों टीमों के प्रशंसकों ने अपनी–अपनी टीमों का भरपूर समर्थन किया, जिसने मैच को और भी रोमांचक बना दिया। अंततः, क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 का फाइनल न केवल खिलाड़ियों के लिए बल्कि समस्त क्रिकेट समुदाय के लिए एक यादगार घटना बन गया।

इस मैच ने उनके उत्साह और समर्पण को प्रकट किया और यह सिद्ध कर दिया कि क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है। यह मैच और इसके नतीजे भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बने रहेंगे, जो इस खेल को अपनाना चाहते हैं और इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं। इस ऐतिहासिक फाइनल क्रिकेट मैच ने क्रिकेट के खेल को एक नया आयाम दिया और इसे विश्वभर में और भी लोकप्रिय बना दिया।

क्रिकेट का यह विश्व कप फाइनल मैच न केवल दो टीमों के बीच एक मुकाबला था, बल्कि यह खेल भावना, समर्पण, और उत्कृष्टता का जश्न था। दोनों टीमों ने अपने खेल से साबित किया कि क्रिकेट में विजयी होने के लिए केवल प्रतिभा ही नहीं बल्कि दृढ़ संकल्प और टीम वर्क भी आवश्यक हैं। इस मैच ने क्रिकेट के प्रति जुनून और उसके खेल को दुनिया भर में और अधिक प्रसिद्ध बना दिया।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह फाइनल मैच न सिर्फ उनके बीच की प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है, बल्कि यह युवा खिलाड़ियों को भी प्रेरित करता है कि वे कठिन परिश्रम और समर्पण के साथ अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। यह मैच उन सभी के लिए एक यादगार पल है जिन्होंने इसे देखा और इसका हिस्सा बने।

इस प्रकार, 19 नवंबर 2023 को आयोजित वर्ल्ड कप के फाइनल मैच में न केवल ऑस्ट्रेलिया की जीत की उम्मीद बनी रही, बल्कि यह क्रिकेट के खेल के प्रति दुनिया भर में लोगों के प्रेम और समर्पण को भी दर्शाता है।

क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 का फाइनल मैच, जिसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया ने एक दूसरे के खिलाफ अपना श्रेष्ठ खेल प्रदर्शित किया, ने सच में यह सिद्ध कर दिया कि क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि यह एक ऐसी भावना है जो मिलियन्स को एक साथ बांधती है। यह फाइनल मैच क्रिकेट की दुनिया में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

बोध–प्रश्न

7. अनुभव लेखन का महत्त्व दूसरों के साथ निम्न में से क्या साझा करने में है?

   (क) विचार (ख) भावनाएँ

   (ग) अनुभूतियाँ (घ) उपर्युक्त सभी

8. एक अच्छे अनुभव लेखन में निम्न में से कौन–सी विशेषताएं शामिल होती हैं?

   (क) विस्तृत होता है (ख) सुव्यवस्थित होता है

   (ग) अनुभव की गहराइयां होती हैं (घ) उपर्युक्त सभी

9. पाठ में दिया गया बाजार दोरे का अनुभव–लेखन निम्न में से किन बातों का वर्णन करता है?

   (क) हीरों, वीरों और मंदिरों की नगरी पन्ना, मध्य प्रदेश का

   (ख) रसोई का सामान, मोबाइल की दुकान का

   (ग) प्रसिद्ध रेस्तरां, मशहूर लस्सी का

   (घ) उपर्युक्त सभी

10. दर्शनीय स्थल खजुराहो के भ्रमण के अनुभव–लेखन में खजुराहो की किन विशेषताओं ने लेखक का मन शांति और संतोष से भर दिया?

    (क) शानदार अभिनव आकार और विशालता

    (ख) शिल्पकला, सौंदर्य और अद्‌भुत 'विमान'

    (ग) प्रमुख गोपुर और मुख्य मंदिर

    (घ) उपर्युक्त सभी

11. क्रिकेट मैच देखने के अनुभव–लेखन में निम्न में से कौन–सी बातें क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल मैच को रोमांचक सिद्ध करती हैं?

    (क) भारत का आस्ट्रेलिया से मुकाबला

    (ख) भारतीय बल्लेबाजों का निरंतर अंतराल पर विकेट खोना

    (ग) आस्ट्रेलिया का पहले तीन बड़े विकेट जल्दी खोना किंतु फिर कप जीतना

    (घ) उपर्युक्त सभी

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

2.5 निष्कर्ष

इस पाठ में हिंदी भाषा की संपर्क भाषा के रूप में विविध भूमिकाओं की गहराई से विवेचना की गई है। इसमें यह बताया गया है कि कैसे हिंदी भाषा विभिन्न सामाजिक और व्यावसायिक परिस्थितियों में अपने आप को ढाल लेती है और विकसित होती है। अस्पतालों, बाज़ारों, शॉपिंग मॉल, मंडी और क्रिकेट मैचों के दौरान हिंदी के प्रयोग के माध्यम से इसकी बहुमुखी प्रतिभा और संचार एवं सांस्कृतिक एकीकरण में इसकी भूमिका को दर्शाया गया है। इस पाठ में हिंदी और स्थानीय बोलियों के मिश्रण, औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोग, और विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका की विस्तृत चर्चा की गई है। इस विश्लेषण से हिंदी के गतिशील स्वभाव तथा सामाजिक संपर्क और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के बीच सांस्कृतिक बंधनों को मजबूत करने में इसकी केंद्रीय भूमिका को उजागर किया गया है।

2.6 शब्दाबली

- **समावेशन** – (सबको) शामिल करने का कार्य (हिंदी के प्रयोग के संदर्भ में)
- **सेतु** – पुल
- **प्रेस्क्रिप्शन** – डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाई (नुस्खा)
- **फॉर्मल** – औपचारिक
- **स्कार्फ्स** – मफ़लर, गुलुबंद
- **टेबलवेयर** – भोजन के समय उपयोग की जाने वाली वस्तुएं (गिलास, प्लेट आदि)
- **आर्कियोलॉजिकल** – पुरातात्त्विक, पुरातत्त्व संबंधी (पुरानी वस्तुओं/इमारतों का अध्ययन/विश्लेषण संबंधी)
- **प्रतिस्पर्धा** – मुकाबला

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

2.7 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग)
5. (ग) 6. (घ) 7. (घ) 8. (घ)
9. (घ) 10. (घ) 11. (घ)

2.8 अभ्यास–प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए–

1. विभिन्न सेटिंग्स जैसे कि अस्पताल, बाज़ार, और बैंकों में हिंदी के संपर्क भाषा के रूप में कार्य करने और विभिन्न सामाजिक स्तरों के बीच संचार को सुविधाजनक बनाने में हिंदी के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।
2. अस्पताल में प्रयोग होने वाली शब्दावली पर विस्तार से लिखिए।
3. बाज़ार में प्रयोग होने वाली शब्दावली पर टिप्पणी कीजिए।
4. मॉल में प्रयोग होने वाली शब्दावली के बारे में बताइए।
5. मंडी में प्रयोग होने वाली शब्दावली पर चर्चा कीजिए।
6. किसी पर्यटन स्थल की यात्रा का अपना अनुभव लिखिए।

2.9 संदर्भ–ग्रंथ

- गौतम, रमेश (संपादक), *'प्रायोगिक हिंदी'* – ओरिएंट ब्लैकस्वान, दिल्ली
- झालटे, दंगल, *'प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग'* – वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- ओम प्रकाश, (डॉ.) *व्यावहारिक हिंदी एवं प्रयोग'* – राजपाल एंड संस, दिल्ली
- धवन, मधू (डॉ.), *'बोलचाल की हिंदी और संचार'* – वाणी प्रकाशन, दिल्ली

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

पाठ : 3

बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली

डॉ. शैलेश शुक्ला
एनएमडीसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम)
हीरा खनन परियोजना, मझगवाँ, पन्ना (मध्य प्रदेश)

रूपरेखा

3.1 अधिगम का उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली
- 3.3.1 खाता संबंधी शब्दावली
- 3.3.2 लेन–देन संबंधी शब्दावली
- 3.3.3 ऋण संबंधी शब्दावली
- 3.3.4 बैंकिंग संचालन संबंधी शब्दावली

3.4 कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली
- 3.4.1 प्रशासनिक शब्दावली
- 3.4.2 प्रशिक्षण संबंधी शब्दावली
- 3.4.3 तकनीकी शब्दावली
- 3.4.4 प्रशासनिक संचार संबंधी शब्दावली
- 3.4.5 कार्यक्रमों के आयोजन संबंधी शब्दावली
- 3.4.6 मीडिया संबंधी शब्दावली
- 3.4.7 मानव संसाधन संबंधी शब्दावली
- 3.4.8 वित्तीय शब्दावली

3.5 निष्कर्ष
3.6 शब्दावली
3.7 बोध–प्रश्नों के उत्तर
3.8 अभ्यास–प्रश्न
3.9 संदर्भ–ग्रंथ

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

टिप्पणी

3.1 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी–

- बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के महत्त्व, उद्देश्य, और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को समझने में सक्षम होंगे;
- वित्तीय और प्रशासनिक परिभाषिक शब्दावली का महत्त्व और उसके उपयोग को पहचान सकेंगे;
- बैंकिंग और कार्यालयीन परिभाषिक शब्दों के माध्यम से वित्तीय साक्षरता और पेशेवर संवाद–कौशल में सुधार कर सकेंगे;
- सामान्य व्यक्तियों, विद्यार्थियों और पेशेवरों के लिए इस ज्ञान को अधिक सुलभ और समझने योग्य बनाने की दिशा में कदम बढ़ा सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

इस पाठ में, हम बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का विस्तृत अध्ययन करेंगे। आज के वैश्वीकृत और तकनीकी रूप से उन्नत समय में, बैंकिंग और कार्यालय प्रणालियाँ कई जटिल प्रक्रियाओं और विशिष्ट शब्दावली से युक्त होती हैं। यह पाठ न केवल उन शब्दावलियों के अर्थ और उपयोग को स्पष्ट करेगा, बल्कि इनके पीछे के सिद्धांतों और व्यावहारिक आवेदन को भी समझाएगा।

वित्तीय संस्थानों और कार्यालय संचालन में शब्दावली का गहरा ज्ञान न केवल विशेषज्ञों के लिए आवश्यक है बल्कि आम जनता, विद्यार्थियों और नवीन पेशेवरों के लिए भी उपयोगी है। इस ज्ञान के साथ, व्यक्ति न केवल अपने दैनिक वित्तीय और कार्यालय संबंधी कार्यों को अधिक कुशलता से संपादित कर सकेगा बल्कि विभिन्न वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के चयन में भी समझदारी दिखा सकेगा।

इस पाठ के माध्यम से हम वित्तीय बाजारों, बैंकिंग प्रणाली, ऋण और निवेश, खाता प्रबंधन, इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, और कई अन्य संबंधित विषयों पर प्रकाश डालेंगे। इसके अलावा, हम आधुनिक कार्यालय प्रणाली में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली जैसे कि डिजिटल

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

दस्तावेज़ीकरण, प्रबंधन सूचना प्रणाली (MIS), ह्यूमन रिसोर्स आदि पर विचार–विमर्श करेंगे। यह पाठ बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता, उद्देश्य और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर केंद्रित है।

वर्तमान समय में बैंकिंग और कार्यालयीन प्रक्रियाएँ काफी विस्तारित और जटिल हो गई हैं, जिसमें विविध पारिभाषिक शब्दों और मुहावरों का प्रयोग होता है। ये शब्दावली न केवल विशिष्ट कार्यालयीन क्रियाकलापों और बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझने में सहायक होती है, बल्कि ये व्यावसायिक संवाद, वित्तीय लेन–देन और प्रबंधन निर्णयों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस लेख में, हम इस शब्दावली की उत्पत्ति, विकास, और इसके विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग को विस्तार से समझेंगे।

इस अध्ययन का उद्देश्य न केवल बैंकिंग और कार्यालयीन शब्दावली के ज्ञान को बढ़ाना है, बल्कि इसे सामान्य व्यक्तियों, विद्यार्थियों, और पेशेवरों के लिए अधिक सुलभ और समझने योग्य बनाना भी है। इससे वित्तीय साक्षरता में वृद्धि होगी और व्यक्तियों को उनके दैनिक वित्तीय और कार्यालयीन कार्यों को अधिक कुशलता और समझ के साथ करने में सहायता मिलेगी। बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली विषय का परिचय देते हुए, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम इस पाठ के माध्यम से उन शब्दों और मुहावरों को समझें जो आधुनिक बैंकिंग और कार्यालय परिवेश में अकसर उपयोग में लाए जाते हैं। इस प्रस्तावना में, हम इस पाठ के उद्देश्य, सामग्री की विविधता, और इसके पाठकों के लिए इसके महत्त्व को विस्तार से वर्णित करेंगे।

हमारी चर्चा शुरू होती है वित्तीय संस्थानों की मूलभूत समझ से, जिसमें बैंकिंग की बुनियादी प्रक्रियाओं और उससे जुड़ी शब्दावली का विश्लेषण शामिल है। इसके बाद, हम कार्यालय प्रबंधन और उसकी गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली विशिष्ट शब्दावली पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

इस पाठ में हम यह भी समझेंगे कि कैसे इन पारिभाषिक शब्दों की समझ वित्तीय निर्णय लेने, कार्यालय की दैनिक गतिविधियों के प्रबंधन, और वित्तीय साक्षरता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण है। हम वित्तीय उत्पादों और सेवाओं की बेहतर समझ और उनके चुनाव में इस ज्ञान के उपयोग की चर्चा करेंगे।

इस पाठ के माध्यम से हमारा लक्ष्य पाठकों को ऐसी पारिभाषिक शब्दावली से परिचित कराना है जो उन्हें वित्तीय और कार्यालय संबंधी जानकारी को समझने और उसका उपयोग करने में सहायक होगी।

© *दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय*

टिप्पणी

3.3 बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली

बैंकिंग सेवाएँ आजकल हमारे रोजगार की जीवनशैली में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये सामाजिक और आर्थिक समृद्धि में सहायक होती हैं और लोगों को वित्तीय रूप से काफी मदद करती हैं। इसके साथ ही, हिंदी भाषा का प्रयोग इस क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली बैंकिंग क्षेत्र की विशेषताओं और सेवाओं को समझने में मदद करती है और लोगों को अपनी आर्थिक गतिविधियों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में सहायक होती है।

बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली एक विशेषज्ञता और सुरक्षा के आदर्शों को बनाए रखने का माध्यम है। इसमें वित्तीय लेन–देन, खाता प्रबंधन, और ऋण सेवाओं सहित अन्य बैंकिंग कार्यों से जुड़े शब्दों का समृद्ध भंडार होता है। यह शब्दावली लोगों को बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी में सही समझ और सुरक्षा के स्तर की जागरूकता प्रदान करती है।

बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व

बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व अत्यधिक है, क्योंकि यह वित्तीय व्यवसाय की भाषा को सरल और स्पष्ट बनाए रखता है और विभिन्न वित्तीय संबंधों के बारे में सुझाव देने और समझाने में सहायक होता है। यह शब्दावली वित्तीय सेवाओं, लेन–देन, बैंकिंग उत्पादों, और अन्य वित्तीय क्रियाओं की समझ को बढ़ाती है और सामान्य लोगों को इस विशेष क्षेत्र में सचेत करती है।

इस पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग वित्तीय संबंधों में स्थिति की सुरक्षा के लिए किया जाता है। जब व्यक्ति बैंक से संपर्क करता है, तो उसे सही समय पर सही जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता होती है। पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से, व्यक्ति बैंक अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ सही तरीके से संवाद कर सकता है और अपनी आवश्यकताओं को समझा सकता है।

यह पारिभाषिक शब्दावली वित्तीय विषयों के बारे में शिक्षा प्राप्त करने हेतु आवश्यक है। वित्तीय समझ, लेन–देन की प्रक्रिया, और बैंकिंग उत्पादों की जानकारी में वृद्धि करने के लिए यह शब्दावली आवश्यक है। वित्तीय शिक्षा के माध्यम से लोग अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्थ होते हैं और बैंकों से संबंधित विभिन्न पहलुओं को समझने में सक्षम होते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

यह पारिभाषिक शब्दावली वित्तीय व्यावसाय में लोगों को पेशेवर स्थिति में प्रभावी बनाए रखने में सहायक होती है। यह व्यापारिक बैंकिंग, निवेश, और अन्य वित्तीय क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक है ताकि वे अपने ग्राहकों और साझेदारों के साथ सही ढंग से संवाद कर सकें और वित्तीय निर्णयों को सही रूप से ले सकें।

बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व अत्यधिक है, क्योंकि यह वित्तीय जगत में सामंजस्य और सुरक्षित संवाद को प्रोत्साहित करता है, लोगों को वित्तीय विषयों में शिक्षित करता है, और व्यावसायिक संबंधों को मजबूत बनाए रखता है।

बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली, जिसे वित्तीय शास्त्र और बैंकिंग क्षेत्र में अच्छे से समझा जाता है, विभिन्न शब्दों और अभिव्यक्तियों की समृद्धि से भरा हुआ संग्रह है। विद्यार्थियों को बैंकिंग शब्दावली की बेहतर समझ के लिए यहाँ बैंकिंग में प्रयोग होने वाले कुछ मुख्य पारिभाषिक शब्द दिए जा रहे हैं–

3.3.1 खाता संबंधी शब्दावली

1. **बचत–खाता (Saving Account):** व्यक्तिगत बचत के लिए उपयोग में लाया जाने वाला खाता, जिसमें जमा राशि पर ब्याज मिलता है। यह एक सुरक्षित और लाभकारी विकल्प है।
2. **चालू–खाता (Current Account):** व्यापारियों और व्यवसायिक संस्थाओं द्वारा उपयोग किया जाने वाला खाता है, जिसमें बड़ी मात्रा में लेन–देन की सुविधा होती है। इसमें न्यूनतम शेष राशि की आवश्यकता होती है और यह लेन–देन के लिए अधिक उपयुक्त है।
3. **फिक्स्ड–डिपॉजिट (Fixed Deposit):** इसे सावधि जमा के नाम से भी जाना जाता है। यह निश्चित समयावधि के लिए बैंक में जमा की गई राशि होती है, जिस पर नियत ब्याज मिलता है। यह एक सुरक्षित निवेश विकल्प है जो ब्याज की दृष्टि से भी अच्छा हो सकता है।
4. **आवर्ती जमा (Recurring Deposit):** इसे आवर्ती जमा भी कहा जाता है। यह नियमित अंतराल पर निश्चित राशि जमा करने की सुविधा है जिस पर अंत में ब्याज सहित पूरी राशि वापस मिलती है। यह वित्तीय योजना एक सुरक्षित तथा निर्दिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक अच्छा विकल्प है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

5. **मासिक आय योजना (Monthly Income Scheme):** इसमें नियमित अंतराल पर जमा की गई राशि पर मासिक ब्याज प्राप्त होता है, जिससे नियमित मासिक आय होती है।
6. **पेंशन–योजना (Pension Scheme):** वृद्धावस्था में सुरक्षित जीवन बिताने के लिए यह योजना राशि प्रदान करती है जिसमें नियमित दिनचर्या के लिए धन जमा किया जा सकता है।
7. **विद्यार्थी बचत खाता (Student Savings Account):** छात्रों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया खाता, जिससे वे बचत और वित्तीय गुणवत्ता की अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
8. **वेतन–खाता (Salary Account):** यह विशेषतः नौकरशाही लोगों के लिए है जिसमें वेतन क्रेडिट और अन्य लाभ शामिल हैं।
9. **सम्पत्ति–बैंकिंग (Wealth Banking):** यह खाता विशेष रूप से बड़ी धनराशि और अन्य वित्तीय सेवाओं के लिए है, जिससे धन को सुरक्षित रखने और वृद्धि करने में मदद मिलती है।
10. **जीवन–बीमा (Life Insurance):** यह वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है और बीमाधारक के परिवार को उनकी मृत्यु के बाद वित्तीय समर्थन सुनिश्चित करता है।

3.3.2 लेन–देन संबंधी शब्दावली

1. **नेफ्ट (NEFT – National Electronic Funds Transfer):** इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से एक बैंक से दूसरे बैंक में धनराशि हस्तांतरित करने की विधि।
2. **आरटीजीएस (RTGS – Real Time Gross Settlement):** उच्च मूल्य के लेन–देन के लिए वास्तविक समय अंतराल में धनराशि हस्तांतरण की सुविधा।
3. **आईएमपीएस (IMPS – Immediate Payment Service):** मोबाइल, इंटरनेट, और एटीएम के माध्यम से तत्काल धन हस्तांतरण की सेवा।
4. **चेक (Cheque):** एक बैंकिंग दस्तावेज़ जिसके माध्यम से खाताधारक बैंक को निश्चित राशि का भुगतान करने का निर्देश देता है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

5. **डेबिट–कार्ड (Debit Card):** खाताधारक को अपने बैंक खाते से सीधे वित्तीय लेन–देन के लिए अनुमति देने वाला कार्ड।
6. **क्रेडिट–कार्ड (Credit Card):** यह खाताधारक को आपूर्तिकर्ता से सामान खरीदने के लिए ऋण प्रदान करता है, जिसे बाद में भुगतान करना होता है।
7. **एनएफएस (NFS – National Financial Switch):** भारत (इंडिया) में विभिन्न बैंकों के बीच इलेक्ट्रॉनिक लेन–देन की सुविधा प्रदान करने वाला नेटवर्क।
8. **एटीएम (ATM – Automated Teller Machine):** स्वचालित मशीन जो नकदी निकासी, जमा, और अन्य बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करती है।
9. **मोबाइल–बैंकिंग (Mobile Banking):** स्मार्टफोन के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा।
10. **इनवॉइसिंग (Invoicing):** व्यापारिक लेन–देन में खुदरा और थोक उद्यमियों के बीच लेन–देन की जानकारी को स्पष्ट और संरचित रूप से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया।

3.3.3 ऋण संबंधी शब्दावली

1. **गृह ऋण (Home Loan):** मकान या अपार्टमेंट खरीदने के लिए लिया गया ऋण।
2. **वाहन ऋण (Vehicle Loan):** वाहन खरीदने के लिए लिया गया ऋण।
3. **शिक्षा ऋण (Education Loan):** उच्च शिक्षा के लिए लिया गया ऋण।
4. **व्यापार ऋण (Business Loan):** व्यापार शुरू करने या विस्तार के लिए लिया गया ऋण।
5. **व्यक्तिगत ऋण (Personal Loan):** व्यक्ति द्वारा आवश्यकताओं के लिए लिया जाने वाला असुरक्षित ऋण।
6. **कृषि ऋण (Agricultural Loan):** किसानों को कृषि क्षेत्र में उनकी आवश्यकताओं के लिए दिया जाने वाला ऋण।
7. **ऋण सुविधा (Loan Facility):** एक विशेष समयावधि में ऋण की उपलब्धता और शर्तें।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

8. **कार्पोरेट ऋण (Corporate Loan):** बड़ी कंपनियों द्वारा व्यापार के लिए लिया जाने वाला ऋण।
9. **स्वरोजगार ऋण (Self-Employment Loan):** योजना के अनुसार खुद का व्यापार शुरू करने के लिए लिया जाने वाला ऋण।
10. **स्वास्थ्य ऋण (Health Loan):** चिकित्सा सेवाओं के लिए लिया जाने वाला ऋण।

3.3.4 बैंकिंग संचालन संबंधी शब्दावली

1. **केवाईसी (KYC – Know Your Customer):** ग्राहक की पहचान और पते का सत्यापन करने की प्रक्रिया।
2. **सीआरएस (CRS – Customer Relationship Summary):** बैंक और ग्राहक के बीच संबंधों का सारांश।
3. **एटीएम (ATM – Automated Teller Machine):** स्वचालित मशीन जो नकदी निकासी, जमा, और अन्य बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करती है।
4. **डिजिटल बैंकिंग (Digital Banking):** इंटरनेट और मोबाइल डिवाइस के माध्यम से किए गए बैंकिंग लेनदेन।
5. **इंटरनेट बैंकिंग (Internet Banking):** ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बैंक सेवाओं का उपयोग करना।
6. **मोबाइल बैंकिंग (Mobile Banking):** स्मार्टफोन एप्लिकेशन के द्वारा बैंक सेवाओं का उपयोग करना।
7. **बैंक शुल्क (Bank Charges):** विभिन्न बैंक सेवाओं के लिए लागू किए जाने वाले शुल्क।
8. **बैंक स्टेटमेंट (Bank Statement):** खाते के लेन–देन का विवरण और सारांश।
9. **पैसा भेजने की सेवा (Remittance Service):** एक स्थान से दूसरे स्थान पर धनराशि हस्तांतरित करने की सेवा।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

10. **ऑटोमेटेड क्लियरिंग हाउस (Automated Clearing House – ACH):** स्वचालित रूप से लेन–देन को सुलझाने के लिए एक इंफ्रास्ट्रक्चर।

ये शब्दावली बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग की व्यापकता और विशेषज्ञता को दर्शाती है। बैंकिंग सेवाओं के इन पहलुओं को समझना न केवल वित्तीय लेनदेन में सहायक होता है, बल्कि यह हमें आर्थिक साक्षरता और स्वावलंबन की ओर भी अग्रसर करता है। इस प्रकार, हिंदी में बैंकिंग शब्दावली का ज्ञान न केवल भाषाई दक्षता बढ़ाता है बल्कि वित्तीय समझ और प्रबंधन कौशल में भी वृद्धि करता है।

बोध–प्रश्न

1. बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली निम्न में से किसे बनाए रखने का माध्यम है?

   (क) विशेषज्ञता (ख) सुरक्षा

   (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

2. बैंकों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली सामान्य लोगों को निम्न में से किसके बारे में सचेत करने हेतु सहायक होती है?

   (क) वित्तीय सेवाओं के बारे में

   (ख) लेन–देन के बारे में

   (ग) बैंकिंग उत्पादों एवं अन्य वित्तीय क्रियाओं के बारे में

   (घ) उपर्युक्त सभी

3. 'विद्यार्थी बचत खाता' से विद्यार्थी निम्न में से किन बातों के महत्व से अवगत हो सकते हैं?

   (क) बचत (ख) वित्तीय गुणवत्ता

   (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

4. मोबाइल, इंटरनेट और एटीएम के माध्यम से तत्काल धन हस्तांतरण की सुविधा हेतु निम्न में से कौन–सा माध्यम उपयुक्त है?

   (क) आईएमपीएस (IMPS) (ख) आरटीजीएस (RTGS)

   (ग) नेफ्ट (NEFT) (घ) एनएफएस (NFS)

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

5. निम्न में से कौन–सा ऋण असुरक्षित ऋण नहीं है?

(क) गृह ऋण (ख) शिक्षा ऋण

(ग) व्यापार ऋण (घ) व्यक्तिगत ऋण

6. ग्राहक की पहचान और उसके पते का सत्यापन कराने वाली प्रक्रिया को कहते हैं–

(क) CRS (ख) KYC

(ग) ACH (घ) ATM

3.4 कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली

कार्यालयीन परिवेश में हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जो किसी संगठन या कार्यालय के संचार, प्रबंधन, और पेशेवरता को सुनिश्चित करने में आधार प्रदान करती है। यह शब्दावली सटीकता और सुगमता के साथ संबंधित होती है, जिससे संगठन की गतिविधियों में सुधार होता है और सहजता से संबंधित जानकारी पहुँचती है। इस अनुसंधान में, हम कार्यालयों में प्रचलित हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न पहलुओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे, जिसमें प्रशासनिक, तकनीकी, मानव संसाधन और वित्तीय शब्दावली शामिल हैं।

कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व

कार्यालयों में पारिभाषिक शब्दावली का प्रचलन एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह संगठनात्मक संबंधों, व्यावसायिक समझौतों, और अंतर–संगठनीय संवादों को सुगमता से संचालित करने में सहायक होती है। इसके माध्यम से कर्मचारी और नेतृत्व एक व्यावसायिक भाषा में सहजता से संवाद कर सकते हैं और समझौतों को सही रूप से फॉलो कर सकते हैं।

पहला, पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग कर्मचारियों के बीच संबंधों को मजबूती देने में सहायक होता है। एक संगठन में विभिन्न विभागों और टीमों के बीच सहयोग और समझौता होना अत्यंत आवश्यक है। पारिभाषिक शब्दावली की मदद से, विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों के बीच संवाद को सुरक्षित और स्पष्ट बनाए रखा जा सकता है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

दूसरा, यह शब्दावली कार्यालय में अच्छे विचारों और विचार–विमर्शों में सहयोग करती है। सही पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करके, कर्मचारी और नेतृत्व विचारों को स्पष्टता से व्यक्त कर सकते हैं, जिससे उच्च स्तर के निर्णयों की प्रक्रिया में सुधार होता है। इससे विभिन्न टीमों और विभागों के बीच सहयोग बढ़ता है और संगठन को सामूहिक रूप से मजबूत बनाए रखता है।

तीसरा, पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग व्यावसायिक संबंधों और समझौतों में किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि विभिन्न पक्षों के बीच समझौते स्पष्ट, संबंधित और सुरक्षित हैं। इससे संगठन को व्यावसायिक लेन–देन, समझौते, और साझेदारियों के साथ संबंधित स्थितियों में सुरक्षा और स्थिरता मिलती है।

चौथा, पारिभाषिक शब्दावली संगठनात्मक संबंधों को सुधारने में मदद करती है। सही शब्दावली का प्रयोग करके संगठन के अंदर सहयोग, विश्वास, और समर्थन की भावना बढ़ती है। कर्मचारी एक दूसरे से बेहतर संबंध बना सकते हैं और संगठन की सामूहिक दृष्टि बढ़ती है।

समर्थन में, कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व अत्यधिक है, क्योंकि यह संगठन के भीतर और बाहर सही संवाद और समझौते को सुनिश्चित करने में सहायक है, जिससे संगठन का सही रूप से चलना और विकसित होना संभव होता है।

आइए कार्यालय में प्रयोग होने वाली पारिभाषिक शब्दावली के कुछ उदाहरणों पर चर्चा करते हैं–

3.4.1 प्रशासनिक शब्दावली

प्रमुख प्रशासनिक शब्दावली के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं जो कार्यालयों में प्रचलित हैं। इन शब्दों का उपयोग संगठन के संचार और प्रबंधन के क्षेत्र में होता है ताकि कर्मचारी और नेतृत्व सही से समझ सकें और कार्यों को संचालित कर सकें। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **कार्यालय प्रमुख (Office Head):** किसी संगठन या विभाग के प्रमुख को कार्यालय प्रमुख कहा जाता है, जो संगठन की समग्र गतिविधियों की निगरानी करते हैं और निर्णय लेते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

2. **आदेश (Order):** एक आधिकारिक निर्देश या आज्ञा, जो किसी कार्य को करने या न करने के लिए दी जाती है।
3. **परिपत्र (Circular):** कार्यालय या संगठन के सभी सदस्यों को सूचना या निर्देश प्रसारित करने के लिए जारी एक आधिकारिक पत्र।
4. **प्रतिवेदन (Report):** किसी कार्य, परियोजना, या अध्ययन के परिणामों या निष्कर्षों का लिखित विवरण।
5. **संविदा (Contract):** दो या दो से अधिक पक्षों के बीच किसी कार्य को करने या न करने के संबंध में किया गया लिखित समझौता।
6. **प्रबंधन (Management):** संगठन या विभाग को सही चलाने और निर्देशन की जिम्मेदारी।
7. **अनुशासन (Discipline):** संगठन में नियमों और आदेशों का पालन करना और कार्रवाई करने की भावना।
8. **समर्थन (Support):** किसी कार्य या परियोजना को सहायता या समर्थन प्रदान करना।
9. **अनुभवी (Experienced):** जो किसी क्षेत्र में बहुत अधिक जानकारी और कौशल रखता है।
10. **सहयोग (Cooperation):** दूसरों के साथ मिलकर काम करना।

3.4.2 प्रशिक्षण संबंधी शब्दावली

1. **प्रशिक्षण (Training):** एक कार्य या कौशल को सीखने के लिए दी जाने वाली शिक्षा या सिखाने की प्रक्रिया।
2. **निर्देशक शिक्षक (Instructor):** एक व्यक्ति जो किसी को कुछ सिखाने का कार्य करता है और प्रशिक्षण प्रदान करता है।
3. **मानक (Standard):** एक निर्धारित स्तर या माप का सेट, जिसे प्रशिक्षण में मापक स्वरूप के रूप में उपयोग किया जाता है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

4. **शिक्षार्थी (Learner):** वह व्यक्ति जो किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर नए ज्ञान और कौशलों को सीख रहा है।
5. **विकास (Development):** व्यक्ति या संगठन की क्षमताओं और कौशलों में सुधार के लिए प्रशिक्षण की प्रक्रिया।
6. **स्वीकृति/मान्यता (Accreditation):** एक संगठन या प्रणाली को एक क्षेत्र में योग्यता और मानकों के आधार पर मान्यता प्रदान करने की प्रक्रिया।
7. **पाठ्यचर्या (Curriculum):** एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण और स्वरूप जो छात्रों को सिखाने के लिए डिज़ाइन किया जाता है।
8. **आधुनिकीकरण (Modernization):** नए तकनीकी और विद्यार्थी–मित्र (छात्र अनुकूल) तंतुओं का प्रयोग करके प्रशिक्षण प्रक्रिया को अद्यतित करने की प्रक्रिया।
9. **उत्कृष्टता (Excellence):** (शिक्षा में) उच्चतम स्तर की प्राप्ति और सिखाने के क्षेत्र में प्रवीणता।
10. **अनुसंधान (Research):** नए ज्ञान, विचार और तकनीकी उन्नति को प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक अन्वेषण और अध्ययन की प्रक्रिया।

3.4.3 तकनीकी शब्दावली

तकनीकी शब्दावली उन शब्दों का समूह है जो किसी संगठन में तकनीकी क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के बीच संवाद को सुगम बनाता है। इसमें कंप्यूटर, सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, और नेटवर्किंग जैसे शब्द शामिल होते हैं जो संगठन की तकनीकी आधारभूतता को समझाने में मदद करते हैं। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **बायोमेट्रिक्स (Biometrics):** एक प्रौद्योगिकी जिसमें व्यक्ति की शारीरिक या सांविदानिक विशेषताएँ, जैसे कि उंगली की छाप, मुँह की छवि, या नेत्रीय रेटिना का स्कैन किया जाता है, ताकि उसे पहचाना जा सके।
2. **आई.ओ.टी. (IoT – Internet of Things):** एक तकनीकी प्रणाली जिसमें विभिन्न उपकरण और उनके साथ जुड़े हुए नेटवर्क इंटरनेट के माध्यम से संवाद कर सकते हैं और डेटा साझा कर सकते हैं।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3. **क्रिप्टोकरेंसी (Cryptocurrency):** एक डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक रूप से उत्पन्न होने वाली धनराशि, जो क्रिप्टोग्राफी का उपयोग करके सुरक्षित है और केंद्रीय संगठन द्वारा नियंत्रित नहीं है। उदाहरण– बिटकॉइन।
4. **रोबोटिक्स (Robotics):** एक मशीनी या स्वयंसेवी सिस्टम जो आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता के साथ कार्रवाई कर सकता है, जिसे साधारित तकनीकी उपकरण द्वारा नियंत्रित किया जाता है। उदाहरण– बिटकॉइन
5. **कृत्रिम बुद्धिमत्ता / आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence – AI):** मानव बुद्धिमत्ता को मिमिक (नकल) करने के लिए डिजाइन किए गए सिस्टम और प्रोसेसेस।
6. **न्यूरल नेटवर्क (Neural Network):** यह एक तकनीकी प्रणाली है जो मानव मस्तिष्क के तंत्रिका विन्यास को मिमिक (नकल) करने का प्रयास करती है और इसका उपयोग अधिकांशतः मशीन लर्निंग में होता है।
7. **क्वांटम कंप्यूटिंग (Quantum Computing):** इस तकनीक का उपयोग क्वांटम बिट्स का उपयोग करके विशेष कम्प्यूटेशन कार्यों को संपन्न करने के लिए किया जाता है, जिसमें क्लासिकल कंप्यूटिंग की तुलना में बेहद तेजी से गणना होती है।
8. **ब्लॉकचेन (Blockchain):** एक सुरक्षित, ट्रांजैक्शन कोडित और निर्दिष्ट तरीके से क्रमबद्ध डेटा को स्टोर करने की तकनीक, जिसमें ब्लॉक कहलाने वाली संरचना में नए डेटा ब्लॉक्स को जोड़ा जाता है।
9. **वायरल वीडियो (Viral Video):** एक ऑनलाइन वीडियो जो तेजी से इंटरनेट पर फैलता है और लाखों या करोड़ों लोगों तक पहुँचता है।
10. **एआर (Augmented Reality – AR):** एक तकनीकी प्रणाली जिसमें वास्तविक दुनिया को डिजिटल वस्तुओं या जानकारी से युक्त किया जाता है, जो उपयोगकर्ता को एक सुधारित अनुभव प्रदान करता है।

3.4.4 प्रशासनिक संचार संबंधी शब्दावली

प्रशासनिक संचार संबंधी शब्दावली संचार एवं प्रबंधन क्षेत्र की अद्भुतता को संवैधानिक रूप से व्यक्त करती है। इसमें "संचार" का अर्थ है जानकारी को प्रस्तुत करना और प्राप्त करना,

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

समझाना और सुनना। शब्दावली में उदाहरण रूप से, साक्षरता, आदर्श, नेतृत्व, समर्पण, सहयोग, प्रतिक्रिया, वहनीयता, व्यावसायिक सम्बन्ध, और संबंधित शब्द शामिल हो सकते हैं। यह शब्दावली प्रशासनिक क्षेत्र में सशक्त एवं सुगम संचार को सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रशासनिक संचार शब्दावली के कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं–

1. **संचार (Communication):** जानकारी को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने की प्रक्रिया को संचार कहा जाता है।
2. **तकनीकी संचार (Technical Communication):** विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में जानकारी को स्पष्ट रूप से समझाने और साझा करने की प्रक्रिया को तकनीकी संचार कहा जाता है।
3. **समाचार पत्रिका पत्र (Newsletter):** किसी संस्थान की सभी नवीनतम जानकारी को सभी कर्मचारियों तक पहुँचाने के लिए एक समाचार पत्रिका तैयार की जाती है।
4. **विकास कार्यक्रम (Development Program):** कर्मचारियों को नए कौशल और नौकरी से संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
5. **टीम बिल्डिंग (Team Building):** कर्मचारियों के बीच समर्थन और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए टीम बिल्डिंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
6. **प्रशिक्षण सत्र (Training Session):** नौकरी से संबंधित नए या अद्यतित ज्ञान को स्थायी करने के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाते हैं।
7. **संगोष्ठी (Seminar):** एक विशिष्ट विषय पर विशेषज्ञों को बुलाकर उनके मार्गदर्शन में एक सेमिनार आयोजित किया जाता है।
8. **संवाद (Dialogue):** कर्मचारियों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए नियोजित कार्यक्रम।
9. **स्थिति–निर्धारण/प्रदर्शन का मूल्यांकन (Performance Appraisal):** कर्मचारियों के प्रदर्शन और योगदान का मूल्यांकन करने के लिए स्थिति–निर्धारण कार्यक्रम।
10. **सृजनात्मक सोच (Creative Thinking):** नवाचार युक्त सोचने के तरीकों को प्रोत्साहित करने के लिए सृजनात्मक सोच कार्यक्रम।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

11. **समस्या समाधान (Problem Solving):** कर्मचारियों को समस्याओं के सही और ज्ञानवर्धक तरीके से समाधान करने के लिए तैयार करने के लिए समस्या समाधान सत्र।

3.4.5 कार्यक्रमों के आयोजन संबंधी शब्दावली

कार्यक्रमों के आयोजन संबंधी शब्दावली में "आयोजन" का अर्थ है किसी विशेष उद्देश्य के लिए किए जाने वाले कार्यक्रम को सूचित करने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें सेमिनार, संगोष्ठी, प्रदर्शनी, समारोह, उद्घाटन समारोह, विकास कार्यक्रम, सम्मेलन, सम्बोधन, और सभी क्रियाएँ शामिल हो सकती हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **आयोजन (Event):** एक विशेष उद्देश्य के लिए किए जाने वाले किसी भी कार्यक्रम को "आयोजन" कहा जाता है।
2. **समारोह (Celebration):** विशेष अवसरों की खुशी में या महत्त्वपूर्ण घटनाओं को उत्सव के रूप में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम।
3. **महोत्सव (Festival):** आत्मीय तिथियों, पर्वों या स्वतंत्रता दिवस जैसे उत्सवों को धूमधाम से मनाने का सार्वजनिक कार्यक्रम।
4. **संगोष्ठी सम्मेलन (Conference):** विशेष विषयों पर विचार–विमर्श के लिए विशेषज्ञों और रुचि रखने वालों को एकत्र करने के लिए आयोजित सम्मेलन।
5. **कार्यशाला (Workshop):** किसी विषय पर आधिकारिक ज्ञान प्राप्त करने और कौशल में सुधार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
6. **प्रदर्शनी (Exhibition):** नए उत्पादों, कला, विज्ञान या औद्योगिक उपादानों को प्रदर्शित करने के लिए आयोजित समारोह।
7. **स्थायी (Permanent):** नियमित रूप से किए जाने वाले और स्थायी कार्यक्रमों को संदर्भित करने के लिए उपयुक्त शब्द।
8. **उद्घाटन समारोह (Inauguration Ceremony):** किसी नए या महत्त्वपूर्ण विषय के लिए आयोजित और उद्घाटन किए जाने वाले कार्यक्रम को संदर्भित करने के लिए उपयुक्त शब्द।
9. **चर्चा (Discussion):** एक विषय पर विचारविमर्श के लिए व्यक्तियों को मिलाकर आयोजित किया जाने वाला कार्यक्रम।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3.4.6 मीडिया संबंधी शब्दावली

मीडिया संबंधी शब्दावली में वह शब्द समाहित हैं जो समाचार, जानकारी, विचार, और मनोरंजन को व्यक्त करने और पहुँचाने के लिए उपयोग होते हैं। इसमें समाचार, टीवी, पत्रकारिता, ऑनलाइन मीडिया, सोशल मीडिया, प्रचार–प्रसार, ब्रोडकास्टिंग, मीडिया व्यक्ति, प्रस्तुति और पत्रिका जैसे शब्द शामिल हो सकते हैं। यह शब्दावली मीडिया क्षेत्र के विकास, प्रसार, और संबंधों को समझने में सहायक होती है। मीडिया संबंधी शब्दावली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **समाचार (News):** नवीनतम घटनाओं और जानकारी का स्रोत, जिसे मीडिया विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत करता है।
2. **टीवी चैनल (TV Channel):** विभिन्न विषयों पर चर्चा, समाचार, और मनोरंजन प्रदान करने वाले चैनल।
3. **पत्रकारिता (Journalism):** सत्य, न्याय, और सार्वजनिक हित की रक्षा करने के लिए समाचार प्रदान करने की कला और विज्ञान।
4. **ऑनलाइन मीडिया (Online Media):** इंटरनेट पर उपलब्ध समाचार, लेख, और वीडियो का समृद्धिकरण।
5. **सोशल मीडिया (Social Media):** इंटरनेट पर लोगों के बीच जुड़ाव बढ़ाने वाले प्लेटफॉर्म, जैसे कि फेसबुक और ट्विटर।
6. **प्रस्तुति (Presentation):** समाचार या जानकारी को लोगों के सामने प्रस्तुत करने का विशेष रूप।
7. **प्रचार–प्रसार (Advertising):** उत्पाद, सेवाएँ, या विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन करना।
8. **मीडिया व्यक्तित्व (Media Personality):** एक व्यक्ति जो मीडिया में प्रोमिनेंट (प्रमुख) रूप से दिखाई देता है, जैसे कि एक टॉक शो होस्ट या एक रेडियो शो होस्ट।
9. **प्रसारण (Broadcasting):** वीडियो या ऑडियो को सार्वजनिक रूप से प्रसारित करने की प्रक्रिया, जैसे कि एक चर्चा का कदम या एक रेडियो शो होस्ट।
10. **पत्रिका (Magazine):** नियमित अंतराल पर प्रकाशित होने वाला मीडिया प्रकार, जो विभिन्न विषयों पर लेख, छवियाँ, और आलेखिका प्रदान करता है।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3.4.7 मानव संसाधन संबंधी शब्दावली

मानव संसाधन संबंधी शब्दावली से संगठन के कर्मचारियों के बीच संवाद को सुनिश्चित करने का कार्य होता है। इसमें कर्मचारी नियुक्ति, प्रोन्नति, वेतन, और प्रदर्शन मूल्यांकन जैसे शब्द शामिल होते हैं जो संगठन के मानव संसाधन प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं–

1. **नौकरी विवरण (Job Description)**: यह संस्था द्वारा एक कर्मचारी की जिम्मेदारियों, योग्यताओं, और कार्यक्षेत्र को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने वाला दस्तावेज है।
2. **भर्ती (Recruitment)**: नए कर्मचारियों को संगठन में लाने की प्रक्रिया जिसमें उम्मीदवारों का चयन, साक्षात्कार, और प्रवेश की प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं।
3. **कर्मचारी मुआवजा (Employee Compensation)**: यह सभी नौकरियों के लिए निर्धारित वित्तीय मुआवजे और लाभों को संदर्भित करता है, जो एक कर्मचारी को मिलते हैं।
4. **समर्पितता (Dedication)**: किसी कर्मचारी की कार्य क्षमता और संगठन में समर्पित होने की मात्रा।
5. **अनुशासन (Discipline)**: एक संगठन में नियमों के शिक्षण और नियमानुसार आचरण को लागू करने की क्षमता।
6. **प्रोफेशनल विकास (Professional Development)**: कर्मचारी के व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के लिए संगठन द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाएँ और योजनाएँ।
7. **उत्कृष्टता (Excellence)**: किसी कार्य में उत्कृष्टता की प्राप्ति और उसे बनाए रखने की प्रवृत्ति।
8. **समृद्धि (Prosperity)**: संगठन और कर्मचारियों की सफलता, उनकी सफलता और संगठन के विकास के साथ जुड़ी होती है।
9. **समर्पण (Commitment)**: किसी कार्य, कार्यक्षेत्र, या संगठन के प्रति निष्ठा और प्रतिबद्धता।
10. **प्रेरणा (Motivation)**: उत्साह, इच्छाशक्ति, और उत्कृष्टता की प्राप्ति के लिए एक कर्मचारी को प्रेरित करने की क्षमता।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

3.4.8 वित्तीय शब्दावली

वित्तीय शब्दावली वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को वित्तीय पारिभाषिक शब्दों को समझाने में मदद करती है। यह शब्दावली बजट, लेखा–जोखा, वित्तीय वर्ष, और ऑडिट जैसे शब्दों को शामिल करती है, जो संगठन की आर्थिक स्थिति को निर्देशित करने में मदद करते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **बजट (Budget):** बजट संगठन या व्यक्ति की आर्थिक योजना होती है जो निर्दिष्ट समयावधि के लिए आय और व्यय को निर्धारित करती है, ताकि सही रूप से वित्तीय प्रबंधन किया जा सके।
2. **लेखा–जोखा (Accounts):** लेखा–जोखा एक संगठन या व्यक्ति के सभी वित्तीय लेन–देन को संरचित रूप में रखने और दर्ज करने की प्रक्रिया है।
3. **वित्तीय वर्ष (Financial Year):** वित्तीय वर्ष एक साल की अवधि है, जिसका उद्देश्य वित्तीय रिकॉर्ड्स को एक साथ रखना और आर्थिक प्रगति का मूल्यांकन करना है।
4. **ऑडिट (Audit):** ऑडिट एक निष्पक्ष जाँच है जो संगठन के वित्तीय रिकॉर्ड्स की सत्यता और सहीपन की जाँच करने के लिए की जाती है।
5. **ऋण (Loan):** ऋण एक धनराशि है जो किसी संगठन या व्यक्ति द्वारा उधार ली जाती है, जिसे समय के साथ वापस करना होता है, आमतौर पर ब्याज के साथ।
6. **अधिग्रहण (Acquisition):** अधिग्रहण से मतलब है किसी संगठन या व्यक्ति द्वारा दूसरे संगठन, संपत्ति, या व्यवसाय की खरीद।
7. **निवेश (Investment):** निवेश धन को विभिन्न स्रोतों में लगाने की प्रक्रिया है ताकि आय बढ़ सके और धन की वृद्धि हो सके, जैसे कि शेयर बाजार, आभूषण, या अन्य निवेश विकल्प।
8. **रिजर्व (Reserve):** रिजर्व वह धन राशि है जो संगठन द्वारा बचाई जाती है और जिसका उपयोग भविष्य में धन की कमी का सामना करने के लिए हो सकता है।
9. **देय राशि (Accounts Payable):** यह उस लंबित आर्थिक देनदारी को संदर्भित करता है जो किसी अन्य संगठन या व्यक्तियों को दी जाती है, जैसे कि विभिन्न चुकताएँ, कर्ज, और अन्य वित्तीय प्रतिबद्धताएँ।

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

10. **शुद्ध लाभ (Net Profit):** शुद्ध लाभ वह राशि है जो संगठन या व्यक्ति को प्राप्त होती है जब उसकी कुल आय से उसके कुल व्यय को घटाकर शेष बचती है, इसमें सभी आय और व्यय का समाहित योगदान होता है।

इस प्रकार, कार्यालयों में प्रचलित हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली व्यक्ति और संगठन के बीच सहज संवाद सुनिश्चित करने में मदद करती है, जिससे संगठन की गतिविधियाँ सही दिशा में हो सकती हैं और सभी कार्यकर्ताओं को उनकी भूमिका के बारे में सही तरीके से समझाया जा सकता है।

बोध–प्रश्न

7. निम्न में से कौन से विकल्प कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के महत्व को रेखांकित करते हैं?

   (क) विभिन्न विभागों, टीमों, क्षेत्रों के लोगों के बीच स्पष्ट और सुरक्षित संवाद

   (ख) विचार–विमर्श में सहयोग

   (ग) विभिन्न पक्षों के बीच सहयोग एवं समर्थन की भावना

   (घ) उपर्युक्त सभी

8. कार्यालय या संगठन के सभी सदस्यों को सूचना या निर्देश प्रसारित करने के लिए जारी आधिकारिक पत्र को कहते हैं–

   (क) प्रतिवेदन (ख) परिपत्र

   (ग) आदेश (घ) संविदा

9. एक निर्धारित स्तर या माप का सेट जिसे प्रशिक्षण में मापक स्वरूप के रूप में उपयोग किया जाता है, कहलाता है–

   (क) मानक (ख) विधिमान

   (ग) अनुसंधान (घ) रोबोटिक्स

10. एक प्रौद्योगिकी जिसमें व्यक्ति की पहचान हेतु उसकी उंगली की छाप, नेत्रीय रेटिना का स्कैन या चेहरे की छवि को अंकित किया जाता है, कहलाती है–

    (क) IoT (ख) बायोमेट्रिक्स

    (ग) रोबोटिक्स (घ) न्यूरल नेटवर्क

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

11. एक विशिष्ट विषय पर विशेषज्ञों को बुलाकर उसके मार्गदर्शन में जो बैठक/सेमिनार आयोजित किया जाता है उसका अन्य नाम है–

(क) संगोष्ठी (ख) संवाद

(ग) समस्या समाधान (घ) टीम बिल्डिंग

12. कार्यक्रमों के 'आयोजन' संबंधी शब्दावली के संदर्भ में निम्न में से कौन से विकल्प आयोजन को इंगित करते हैं?

(क) समारोह, महोत्सव (ख) संगोष्ठी, कार्यशाला

(ग) प्रदर्शनी, उद्घाटन समारोह (घ) उपर्युक्त सभी

13. निम्न विकल्पों में मीडिया संबंधी शब्दावली को इंगित करने वाले उदाहरण हैं–

(क) समाचार, टीवी चैनल (ख) पत्रकारिता, आनलाइन मीडिया

(ग) सोशल मीडिया, प्रसारण (घ) उपर्युक्त सभी

14. नौकरी विवरण, भर्ती, कर्मचारी मुआवजा, अनुशासन, प्रोफेशनल विकास, उत्कृष्टता आदि जैसे शब्द निम्न में से किस पारिभाषिक शब्दावली को इंगित करते हैं?

(क) मानव संसाधान (ख) वित्तीय

(ग) मीडिया (घ) तकनीकी

15. बजट, लेखा–जोखा, वित्तीय वर्ष, ऑडिट, निवेश, रिजर्व आदि शब्द जिस पारिभाषिक शब्दावली को इंगित करते हैं, वह है–

(क) मानव संसाधान (ख) वित्तीय

(ग) मीडिया (घ) तकनीकी

3.5 निष्कर्ष

इस पाठ में, हमने बैंकों और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के महत्त्व और उपयोग की गहन जानकारी प्राप्त की। इसमें विभिन्न प्रकार के बैंकिंग खातों, लेन–देन की विधियों, ऋण के प्रकारों, बैंकिंग संचालन, प्रशासनिक भाषा, प्रशिक्षण संबंधी शब्दावली,

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

तकनीकी शब्दावली और संचार से संबंधित शब्दावली को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य वित्तीय साक्षरता और प्रशासनिक कुशलता को बढ़ाना है, ताकि विद्यार्थी इन शब्दावलियों से परिचित होकर अधिक सही निर्णय ले सकें और वित्तीय व प्रशासनिक संबंधी कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से संभाल सकें। इस विस्तृत शब्दावली का अध्ययन छात्रों, पेशेवरों और आम जनता को बैंकिंग और कार्यालय के जटिल परिदृश्यों को समझने में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

यह पाठ न केवल वित्तीय और प्रशासनिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों एवं नवीन प्रवेशकों के लिए एक प्रवेश द्वार का काम करता है बल्कि उन पेशेवरों के लिए भी ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है जो अपने कौशल और ज्ञान को अद्यतन रखना चाहते हैं। इस पाठ के माध्यम से, हमें यह समझ आया कि विशेषज्ञता प्राप्त शब्दावली का ज्ञान न केवल वित्तीय लेन–देन को समझने और संचालित करने में सहायक होता है, बल्कि यह हमारे समग्र व्यावसायिक संचार को भी सुधारता है।

इस पाठ में दी गई शब्दावली की व्याख्या के माध्यम से, विद्यार्थियों को बैंकिंग और प्रशासनिक क्षेत्रों में उपयोग होने वाले मुख्य शब्दों और अवधारणाओं की गहराई से समझ मिली है। इससे उन्हें न केवल अपने वित्तीय और प्रशासनिक कार्यों को अधिक कुशलतापूर्वक संभालने में मदद मिलती है, बल्कि वे अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल को भी विकसित कर सकते हैं। इस तरह, यह अध्याय वित्तीय साक्षरता और प्रशासनिक कुशलता के विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

3.6 शब्दावली

- **दस्तावेजीकरण** – जानकारी का लिखित रूप, लिखित जानकारी (किसी उत्पाद, प्रणाली या सेवा से संबंधित)
- **बुनियादी** – आरंभिक, मौलिक, अंतर्निहित
- **मूलभूत** – आधारभूत
- **सामंजस्य** – अनुकूलता, उपयुक्तता

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

- **सावधि** – निश्चित कार्यकाल वाला
- **आवर्ती** – नियमित अंतराल में बार–बार घटित होना
- **क्रेडिट** – यह खाते में आने वाले पैसे को संदर्भित करता है, साख, उधार
- **हस्तांतरण** – (पैसे) एक खाते से दूसरे खाते में जाना (बैंकिग के संदर्भ में)
- **असुरक्षित ऋण** – बिना संपार्श्विक (गारंटी/अमानत) के दिया/लिया जाने वाला ऋण
- **परिवेश** – पृष्ठभूमि, वातावरण, स्थान, समय और परिस्थितियां जिनमें कुछ घटित होता है।

3.7 बोध–प्रश्नों के उत्तर

1. (ग)	2. (घ)	3. (ग)	4. (क)
5. (क)	6. (ख)	7. (घ)	8. (ख)
9. (क)	10. (ख)	11. (क)	12. (घ)
13. (घ)	14. (क)	15. (ख)	

3.8 अभ्यास–प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए–

1. वित्तीय साक्षरता का समाज पर क्या प्रभाव है?
2. वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान बैंकों की भूमिका क्या रही है?
3. बैंकिंग खातों के कितने प्रकार होते हैं और उनके नाम क्या हैं?
4. ऋण के कौन–कौन से मुख्य प्रकार हैं जो बैंक प्रदान करते हैं?
5. बैंकों में लेन–देन की कौन–कौन सी विधियाँ प्रचलित हैं?
6. बैंकिंग संचालन से आप क्या समझते हैं?

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

7. प्रशासनिक भाषा में प्रयुक्त होने वाली कुछ मुख्य शब्दावलियां क्या हैं?
8. प्रशिक्षण संबंधी शब्दावली में कौन–कौन से शब्द शामिल हैं?
9. तकनीकी शब्दावली में किन शब्दों का समावेश होता है?
10. संचार से संबंधित शब्दावली में कौन–कौन से मुख्य शब्द होते हैं?
11. वित्तीय लेन–देन को समझने में शब्दावली का क्या महत्त्व है?
12. बैंकिंग और कार्यालयों में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली के ज्ञान से आपकी कार्यक्षमता में किस प्रकार का सुधार होता है?

3.9 संदर्भ–ग्रंथ

- *'बैंकों में हिंदी का प्रयोग'*, भारतीय रिजर्व बैंक, https://www.rbi.org.in/hindi/Upload/Notifications/PDFs/Nt-mc-74-07-08.pdf
- पाण्डेय, कैलाश नाथ (डॉ.), *'कार्यालयी हिंदी'* – ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली
- श्रीवास्तव, गोपीनाथ *'सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग'* – लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
- सहाय, साकेत (डॉ.), *'वित्त बैंकिंग भाषा : विविध आयाम'* – संस्कार साहित्य माला, मुंबई
- सहाय, साकेत (डॉ.), *'जन बैंकिंग : E–बैंकिंग'* – नालंदा प्रकाशन, दिल्ली

© दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग, मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

टिप्पणी

टिप्पणी

दूरस्थ एवं सतत् शिक्षा विभाग
मुक्त शिक्षा परिसर, मुक्त शिक्षा विद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

20CUS01329